अन्तरिक्ष की दुनिया में

रोमांचक वैज्ञानिक उपन्यास-माला 3

प्रिय संजीव एवं विदुषी पुत्रियों को--

आज हम विज्ञान के युग में रह रहे है जहा प्रकृति के नित्य नए रहस्य खुल रहे है। मानव के लिए जो बाते अनहोनी समझी जाती थी आज वे सभी सम्भव होती जा रही है।

विकसित एव विकासशील देश अपने वैज्ञानिकों को अन्तरिक्ष में भेजकर प्रकृति की खोज में लगे हुए है। आज का वैज्ञानिक चांद पर पहुंच चुका है तथा अन्य नक्षत्रों की खोज में भी रॉकेट आदि छोड़े जा चुके है। चांद की धरती के भूखण्डों का नामकरण भी कुछ राष्ट्रों द्वारा किया जा चुका है। भविष्य में चांद पर बस्तियाँ बनने की भी सम्भावनाए है। इस दिशा मे रूस तथा अमेरिका में होड लगी हुई है। इन देशों ने अन्तरिक्ष में कुत्ते, खरगोश, बन्दर तथा कीटाणु और पौधे भेजकर अन्य नक्षत्रों की खोज का मार्ग प्रशस्त किया है।

"अन्तरिक्ष की दुनिया में" अन्तरिक्ष से सम्बधित वैज्ञानिक उपन्यासों की एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें वैज्ञानिकों की रोमांचकारी गतिविधियों, उनकी महत्त्वाकांक्षाओं, उनकी खोजों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

रोमांचक वैज्ञानिक उपन्यास माला —

अन्तरिक्ष की दुनिया में

3

एस. सी. दत्त

सहयोग प्रकाशन, दिल्ली-110091

प्रथम संस्करण : 1991

मूल्य : तीस रुपये

सहयोग प्रकाशन
41, सहयोग अपार्टमेंट
मयूर विहार फेज-I
दिल्ली-110091

कम्प्यूटर कोड्स, दिल्ली-110009 द्वारा
ताज प्रेस, मायापुरी, नई दिल्ली
में मुद्रित.

Antriksh Ki Dunian Main-(3)
Chamatkari Ghole
an adventurous science fiction in Hindi
by Shri S.C. Dutta

1. विस्फोट

"अरे ! यह एकदम विस्फोट कैसे हो गया". एक टब ही खिड़की में से उड़कर रास्ते में से सब कुछ रौंदता हुआ निकल गया है.

शान्त को उड़ता हुआ तांबे का टुकड़ा केवल एक बिन्दु की तरह दिखाई दे रहा था. दूर उड़ते हुए बिन्दु को वह दूरबीन से देखता ही रह गया. शीघ्र ही बिन्दु आँखों से ओझल हो गया.

तांबे के टूटे-फूटे टुकड़ों को जो वर्षों से कूड़े-करकट में पड़े थे इस प्रकार गायब होते देखकर वह दांतों तले उंगलियां दबाने लगा.

"टूटे-फूटे टुकड़ों के बचे-खुचे कूड़े को साफ कर दो" -- शान्त अपनी प्रयोगशाला सहायक को बोला.

"क्या हो गया डॉक्टर साहब ?"

"मैं स्वयं भी नहीं जानता" डॉक्टर शान्त ने उत्तर दिया.

पड़ोस की प्रयोगशाला से रसायन शास्त्री साकेत मुस्कराता हुआ आया और बोला "मुझे भी हल्ले-गुल्ले की आवाज आई है. विस्फोट किया है क्या ?"

"ऊं हूँ" शान्त ने सिर हिलाया "कुछ हुआ है, मैं इतना ही कह सकता हूँ"

सभी वस्तुओं को टटोलते हुए जो कुछ हुआ था उसने उसका विवरण दिया. तथा पास पड़े हुए यन्त्रों को उसने छुआ.

"अरे भाई ! जो कुछ हो गया सो हो गया. आगे के लिए इस धन्धे पर मिट्टी डालो" साकेत ने शान्त को परामर्श दिया.

जब उसने देखा कि शान्त उसकी बात नहीं सुन रहा है तो वह चलता बना.

शान्त अपनी मेज की ओर बढ़ा और मुँह में पाईप डालकर धुआं निकालने लगा. उसकी समझ में नहीं आया कि बिना किसी शक्ति के टब का गोली की तरह उड़ना कैसे सम्भव था ! कोई अणु-शक्ति का प्रभाव नहीं. न ही उसके यन्त्र किसी प्रकार की प्रतिक्रिया दिखा रहे थे.

वह अपने मन को सभी प्रकार से बन्द करके इस विस्फोट के कारण को गभीरता से सोचने लगा.

शान्त के अन्य सभी साथी दिन-भर का काम निपटाकर अपने-अपने घरों को लौट चुके थे, परन्तु वह अपने रहस्य की खोज में डूबा रहा और रात हो गई.

आखिर वह उठा, बत्ती जलाई तथा सोचने लगा -- "और तो कुछ हुआ नहीं ; घोल तावे में जरूर पड़ गया है और बिजली की तारे परस्पर भिड़ गई हैं जब मैंने बीकर को पकड़ा है. अचम्भा ही होगा यदि फिर से ऐसी घटना हो जाए."

उसने तांबे की तार का टुकड़ा लिया और उसे रहस्यात्मक धातु के घोल में डाल दिया. तब उसने कण्डक्टर से तार को छुआ. एक चिंगारी निकली और तुरन्त विलीन हो गई. तभी बंदूक की गोली दागने का – सा धमाका हुआ और वहां पड़ी एक ईंट में बड़ा सा छेद हो गया जहा से तार गुजरी थी "कोई शक्ति ही तो होगी" – उसने सोचा

शान्त के पेट में सहसा चूहे नाचने लगे. उसकी घड़ी दस बजा रही थी और उसने अपनी मगेतर के साथ खाना खाने का वचन दे

रख था जोकि उनकी सगाई के बाद यह पहला भोज था.

अपने बरामदे में से निकलते हुए उसने देखा उसका साथी वैज्ञानिक डॉ. केशानी भी इस समय तक दफ्तर में काम कर रहा था. वह भवन से बाहर चला गया और अपनी मोटर साईकल पर सवार होकर तेजगति से अपनी मंगेतर के घर पर पहुंच गया.

जल्दी में उसे अपनी मोटर साईकल का भी ध्यान नहीं रहा और यदि वह एक निपुण चालक न होता तो शायद टक्कर मार लेता.

"ओहो ! यह कैसा बखेड़ा हो गया. इधर से भी मुझे देरी हो गई है. वह तो मुझे कोसेगी".

2. द्युति से शान्त की भेंट

शाम होने को आई और द्युति की मां अपनी बेटी के पीछे-पीछे कमरे में गई जहा कि बेटी ने अपने वस्त्र बदलने थे. मां हैरान थी कि उसकी इतनी सुन्दर बेटी के लिए कई सुन्दर तथा सम्पन्न युवकों ने प्रस्ताव रखा था, परन्तु उन सबको इनकार करके एक साधारण घराने के लड़के को उसने स्वीकृति कैसे दे दी.

द्युति अपने ध्यान में मग्न सीढ़िया चढ़ गई. उसने घड़ी में देखा समय छह से थोड़ा ऊपर हुआ था. वह अपनी श्रृंगार मेज के पास बैठ गई जहां शान्त का चित्र टँगा हुआ था. उसका मजबूत चेहरा था पर इतना सुन्दर नहीं. भूरी आंखे थीं, चौड़ी भूएं और जन्मजात योद्धा का जबड़ा. इन्हीं विशेष बातों के कारण द्युति ने शान्त को हां कर दी थी. तभी उसकी सांस तेज हो गई और गालों पर लाली छा गई और वह मुस्कराने लगी.

उसने विशेष सावधानी से वस्त्र पहले, नीचे उतर आई तथा बरामदे में अपने अतिथि की प्रतीक्षा करने लगी.

आध घंटे के बाद उसकी मां द्वार पर आई और बोली "कहीं कुछ गड़बड न हो गई हो, वह अभी तक भी नहीं पहुंचा".

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं", द्युति ने सहज स्वभाव से कहा -- "रास्ते में भीड़-भाड़ है. तेज चलाते समय वह नियमों को भी ताक पर रख देता है. खाने के लिए थोड़ी देर और रुक सकते हैं".

"हाँ, हाँ क्यों नहीं ?" मां वापिस कमरे में लौट गई.

आध घंटा और गुजर गया. द्युति फिर भी दृढ़ मुद्रा में अपना सिर ऊंचा किए हुए भीतर चली गई. खाने का समय निकला जा रहा था. उन्होंने अनमने से खाना खाया. परिवार खाना खाकर दूसरे कमरे में चला गया. पर वह अतिथि की प्रतीक्षा में बैठी रही. साढ़े दस बज गए. तब शान्त आ धमका.

द्युति ने द्वार खोला, परन्तु वह अन्दर नहीं आया. वह उसके पास खड़ा रहा. उसके चेहरे पर एक भय-सा छाया हुआ था फिर भी वह लड़की मुस्करा दी.

"प्रिये, मुझे खेद है. मजबूरी के कारण मुझे देर हो गई. तुम्हारी नाराजगी भी सच्ची है, परन्तु यदि मैं मजबूरी बताऊं तो बुरा तो नहीं मानोगी ?"

"मेरे विचार में तो तुमने ऐसा काम किया नहीं, भीतर आओ".

वह लड़की के निकट आ गया और मुस्कराने लगा.

"क्या कोई विशेष बात हो गई थी ?"

"एक विचित्र बात हुई है. पहले तुम विश्वास दिलाओ कि मेरे होश में होने में तुम्हें शक तो नहीं ?"

वह उसे जरा रोशनी में ले गई तथा उसकी आँखों में देखने का अभिनय करने लगी.

"शान्त, तुम भले चंगे हो, सच-सच बताओ जो भी घटना घटी है. कहीं बम विस्फोट से संस्था के कार्यालय को तो नष्ट नहीं कर आए ?"

"ऐसी कोई बात नहीं", वह मुस्कराया -- "जो कुछ हुआ है मैं स्वयं भी नहीं समझ पाया. तुम जानती हो वर्षों से प्लेटीनम का कचरा पड़ा हुआ था, मैं उसपर प्रयोग कर रहा था".

"इस बारे में जिक्र तो तुमने किया था कि प्लेटीनम तथा अन्य धातुओं से कुछ कमाई हुई है और नई खोज की बात भी तुमने बताई थी. बताई थी न ?"

"बिल्कुल ! मैंने कचरे में से धातुओं के टुकड़े अलग-अलग कर दिए थे फिर भी काफी बचे पड़े थे. उन्हें प्रयोग में लाया, परन्तु वे कसौटी पर नहीं उतरे".

"प्रयोग करते समय आज एक विचित्र घटना घट गई. मैंने अणु प्रयोग किया. अलग-अलग अणुओं का प्रयोग करते समय सांय-सांय की ध्वनि हुई, मैंने बीकर को मजबूती से पकड़ लिया. तारें भाप के बर्तन में पड़ गईं और सभी यन्त्र सिवाए बीकर के, खिड़की में से, आवाज की गति से भी कई गुणा अधिक वेग से, उड़ गए. मैं अपनी दूरबीन से देखता ही रह गया. वे सभी वस्तुएं अभी भी उसी वेग से उड़ती जा रही हैं. आज ही यह घटना घटी है जिससे देरी हो गई है, मुझे खेद है. बाकी मेरा प्यार तुमसे है और रहेगा. अब गुस्सा गिला तो नहीं ?"

"वाह ! शान्त"

शान्त ने द्युति को एक बार बाहों में भर लिया और फिर वापस चलने के लिए अपनी मोटर साईकल पर सवार हो गया. वह उसे बाहर तक छोड़ने आई थी.

मोटर साईकल की लाल रोशनी में ही द्युति अपने कमरे में लौट गई और लंबी-लंबी सांस लेती हुई पलंग पर बैठ गई.

3. शान्त व कर्ण की मित्रता

शान्त का बचपन हिमाचल प्रदेश के चम्बा नगर में गुजरा था. वह एक ऐसा रमणीक स्थान था जहां प्रकृति ने दिल खोलकर छटा बिखेर रखी थी. रावी नदी का कलकल निनाद, चील तथा देवदार के पेड़, गर्म तथा शीतल जल के स्रोत, धौलागिरि की बर्फ से ढकी हुई चोटियां, सेबों के बगीचे, ब्रहमपुर घाटी की शान्ति तथा खिजियार झील का अनुपम दृश्य प्रभु की लीला का अनूठा नमूना था. उस अनुपम वातावरण में तो नास्तिक भी प्रभु की लीला का भक्त बन जाता था.

शान्त को चम्बे के चौगान का, पहाड़ी पर स्थित मन्दिरों का, तथा चम्बा नरेश के भव्य राज भवनों का, तथा वहां के गद्दी लोगों के जीवन को निकट से देखने का अवसर बराबर मिलता रहा. वह बालक प्रकृति के रहस्यों में उलझकर रह जाता था.

शान्त का पिता एक बड़ा जमींदार था जिसके देवदार के जंगल थे. वह बड़ा परिश्रमी जीव था जो अपनी इकलौती सन्तान से बहुत स्नेह करता था. इसकी मां एक भद्र महिला थी जिसे पुस्तकें पढ़ने में विशेष रुचि थी. उसे अपनी मां की धुंधली-सी याद थी जो कि उसे बचपन में ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गई थी. पिता ने पहाड़ी प्रदेश में अपना सुन्दर निवास बना रखा था जहां वह शान्त का प्यार से पालन-पोषण करता था.

हिमाचल के वन, पर्वत, घाटियां तथा नदी-नाले उसे सदैव

आकर्षित करते रहते थे. वह शिकार करने भी जाया करता था. वह प्रकृति की अनुपम छटा को देखकर गद्‌गद्‌ हो जाता था और सोच में पड़ जाता कि इतनी सुन्दर सृष्टि किस शक्ति ने बनाई है और कैसे. इस समस्या का हल ढूंढने के लिए वह सदा बेचैन रहता था. इस विशाल तथा अद्‌भुत ब्रह्माण्ड के रचयिता के विषय में वह प्रायः सोचता रहता था.

शान्त अपनी मां की भांति अध्ययनशील था. वह अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए पुस्तकें पढ़ता रहता था और उनसे मन में उठने वाले प्रश्नों का हल भी ढूंढा करता था

एक बार चम्बा के वन में भयंकर आग लग गई. शान्त के पिता एवं उनके वन भी उसी में भस्म हो गए. परिणाम स्वरूप बालक ने सदा के लिए वन से मुँह मोड़ लिया.

तब उसने पाठशाला में प्रवेश किया. हाईस्कूल के बाद कॉलेज में प्रवेश पाकर उसने छात्रवृत्ति प्राप्त की. अनाथ बालक ने अपने ही परिश्रम के बलबूते पर अपना भविष्य बनाया. उसके प्रकृति प्रेम तथा पहाड़ी जीवन ने उसे कॉलेज में एक प्रसिद्ध खिलाड़ी बना दिया. वह केवल पढ़ने-लिखने में ही सबसे आगे नहीं था बल्कि टेनिस तथा फुटबाल में भी सबका नेता बन गया. जिसपर कि उसके कॉलेज को गर्व था.

पुस्तकों के अध्ययन में तो उसकी विशेष रुचि थी ही, वह हाथ के काम में भी किसी से कम नहीं था. कॉलेज के छात्र तथा अधिकारी भी उसकी कुशाग्र बुद्धि तथा कार्य पटुता पर आश्चर्य करते थे.

उसने बी.ए. में रसायन शास्त्र में विशेष प्रवीणता प्राप्त की तथा विश्वविद्यालय में अन्वेषक बन गया और धातुओं तथा अणु शक्ति पर शोध कार्य भी करने लगा. कुछ ही समय में उसने 'दुर्लभ

धातु प्रयोगशाला' के नाम से एक निजी प्रयोगशाला स्थापित कर ली.

शान्त एक आकर्षक व्यक्तित्व रखता था, छह फुट ऊंचाई, विशाल कन्धे, पतली कमर और बड़ी हिम्मत का व्यक्ति. प्रयोगशाला में भी उसने अपने कठोर जीवन को बनाए रखा. वह काफी समय मोटर साईकल चलाने, टेनिस तथा तैराकी में बिताता था.

उसने हिमाचल प्रदेश तथा उत्तर भारत में एक खिलाड़ी के रूप में विशेष नाम पा लिया. डिस्ट्रिक्ट टूर्नामेंट में उसका परिचय एक अन्य खिलाड़ी राणाकर्ण से हो गया जो एक विख्यात अन्वेषक, पुरातत्वज्ञ तथा टेनिस का चैम्पियन था. टूर्नामेंट में दोनों का मुकाबला हुआ जिसमें यद्यपि कर्ण जीत गया परन्तु उनकी मित्रता हो गई और वे दोनों खिलाड़ी उत्तर भारत के नामी खिलाड़ी बन गए

शान्त के खेल से प्रभावित होकर कर्ण ने उसके साथ मिलकर आगे इकट्ठा प्रशिक्षण लेना सहर्ष स्वीकार कर लिया.

उनके अगले खेलों में उन दोनों की टीम सारे टेनिस जगत में नमूने की जोड़ी बन गई. सभी लोग उन्हें सगे भाइयों की जोड़ी ही समझते थे. उनकी दोस्ती इतनी गाढ़ी थी कि न तो कर्ण की अमीरी तथा न ही शान्त की निर्धनता मार्ग में खड़ी हो सकती थी. उनकी कृष्ण-सुदामा वाली आदर्श मित्रता थी. शान्त की साधारण कोठरी में हो चाहे कर्ण के भव्य महल में उन दोनों की मित्रता अटूट थी. वस्तुतः वे एक-दूसरे के पूरक थे.

कर्ण की सम्पत्ति अपार थी. उसे किसी भी चीज की कमी नहीं थी. अपनी सम्पत्ति का प्रबन्ध उसने विशेषज्ञों को सौंप रखा था. यह बात भी नहीं कि वह किसी प्रकार से आलसी हो अथवा निरुद्देश्य हो, बल्कि वह अन्वेषक, पुरातत्ववेता तथा प्रसिद्ध खिलाड़ी था. आलस्य का वह शत्रु था. इतना ही नहीं वह एक

कुशल इंजीनियर तथा अपनी प्रकार का आप ही राकेट के निर्माण का विशेषज्ञ था.

वह अध्ययनशील था. उसकी पैतृक सम्पत्ति भी उसके अधिकार में थी. उसने अपने भवन को अपनी रुचि का बना लिया. उसका अपना एक पुस्तकालय भी था जिसमें उसने अनेक अमूल्य पुस्तकें अपनी रुचि की रखी हुई थीं. उसे संग्रहालय ही कहिए.

कर्ण संगीत का भी विशेष प्रेमी था, यद्यपि स्वयं किसी यन्त्र को भी बजाना नहीं जानता था. उसने सारंगी रखी हुई थी जिसे उसके संगीतज्ञ मित्र ही बजाया करते थे. संगीत की सराहना करना वह खूब जानता था.

उसने धनाढ्य होने पर भी अपनी मित्रता का घेरा सीमित ही रखा हुआ था. उसने अपना परिचय कुछेक मित्रों तक ही सीमित रखा.

स्त्रियों के आकर्षण का केन्द्र होने पर भी वह स्त्री जाति की उपेक्षा करता था. उसके जीवन में शौक ही ऐसे थे जिनमें स्त्रियों की रुचि नहीं हो सकती थी. उनके राह अलग-अलग थे.

कर्ण की द्युति से मित्रता तो संयोगवश हो गई थी जिससे कि उसका परिचय शान्त के द्वारा हुआ था. द्युति का खुला निष्कपट मेल-जोल विशेष मित्रता में विकसित हो गया और यहां तक कि वह मेल जीवन के अन्त तक बना रहा.

द्युति तथा शान्त एक दिन घूमते-घूमते वर्षा से घिर गए. तभी उन्हें कर्ण के बरामदे में शरण लेनी पड़ी. उसने उन्हें अन्दर आने को निमंत्रित किया तथा सारंगी बजाने के लिए आग्रह किया. द्युति सारंगी को छूते ही उसमें ऐसी तल्लीन हो गई कि वह अपने को भी भूल गई. उसने ऐसी सुरीली तान बजाई कि स्वयं भी अचम्भे में पड़ गई कि वह ऐसी मार्मिक तान बजा भी सकती थी. उसे वर्षा,

समय, जगह तथा अपना आप सब कुछ भूल गया. यह उसकी कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना था.

उसकी तान से समस्त वातावरण गूंज उठा. उस युवती के स्वप्न को महसूस करते हुए कर्ण को ध्यान आया कि ऐसी स्त्री के घर में होने से गृहस्थ जीवन कितना व्यस्त तथा सार्थक बन सकता था. उसके मन में लड़की के प्रति प्रेम भाव तो नहीं जागा, क्योंकि वह जानता था कि उसका शान्त से होने वाला नाता केवल मृत्यु ही तोड़ सकती थी. वह यह अब जान गया कि उस युवती ने उसे एक बड़ी भेंट दे दी थी उसके बाद उसने उस स्वप्न को मन में संजोए रखा कि उसका स्वप्न साकार होने पर ही जीवन सार्थक हो पाएगा

4. घोल की बोतल की नीलामी

अपने छात्रालय में लौटने पर शान्त ने वस्त्र बदले और बिस्तर पर लेट गया, पर नींद कहा थी. वह जानता था कि आज जो कुछ उसने देखा था वह उसकी अन्तरिक्ष उड़ान का आधार बन सकता था.

सुबह नाश्ते के समय तक उसने अस्थायी सिद्धान्त ढूँढ निकाला था तथा मार्ग में पड़ने वाली समस्याओं का अनुमान भी लगा लिया था.

प्रयोगशाला में पहुँचते ही उसे मालूम हुआ कि साकेत द्वारा उसके साहसिक कार्य की अफवाह पहले ही उड़ा दी गई थी जिससे उसका कमरा शीघ्र ही लोगों के लिए रोचक केन्द्र बन गया. वैज्ञानिकों की भीड़-भाड़ लग गई. वह अपने सिद्धान्त की व्याख्या करने जा ही रहा था कि साकेत ने रोक दिया.

"ठहरिए डॉक्टर शान्त ! तुम्हारी बांह में मैं जरा टीका लगाता हूं". पास पड़ी सुई को उसने शान्त की बांह में लगाया, परन्तु उससे कोई भी प्रतिक्रिया नहीं हुई.

"ठहरिए, मैं दिखाता हूं" -- शान्त बोला, उसने तांबे की तार को घोल में डुबोया.

कुछ भी न हुआ और अपने कंडक्टर के छूने से भी तार में कोई हरकत नहीं हुई. भीड़ निराश होकर टूटने लगी. "अरे यह फिरे हुए दिमाग की कल्पना है" -- कुछेक का कहना था.

जब सभी लोग चले गए तो शान्त निराश-सा सोचने लगा कि यह प्रयोग कल तो दो बार सफल रहा और आज कोई प्रतिक्रिया ही नहीं हो रही है. वातावरण थोड़ा बदलना पड़ेगा.

अब एक ही सभावना थी, केवल एक. डॉक्टर कैशानी के आगे वाले कमरे में मशीन है जिसने पहले भी काम दिया था. उसपर प्रयोग करके देखा जा सकता था.

पिछली रात को वर्षा होती रही थी. अभी वह विचार मग्न था कि तार में अनोखी तथा स्पष्ट चमक नजर आई. तेजाब में भिगोई हुई तार का रंग भूरा हो गया.

शान्त ने तारों को धातु के टुकड़ों से छू दिया तभी वह धातु भारी गूंज से उड़कर गायब हो गई.

वह अपने पड़ोसियों को बुलाने के लिए चल पड़ा, परन्तु कुछ सोचकर रुक गया. जब तक स्वय पता न लगा ले वह किसी को भी नहीं बताएगा. वह क्या वस्तु थी, उसका क्या प्रभाव था तथा क्यों और कैसे वह काम करती थी और उसे काबू में भी रखा जा सकता है या नहीं ? इन सभी बातों का अर्थ था समय, सामग्री तथा सबसे बढ़कर धन.

शान्त ने शेष समय के लिए छुट्टी ली और अपनी मोटर

साईकल लेकर अपने मित्र राणा कर्ण की ओर चला गया. उसके विशाल बंगले के आगे बिछे मार्बल पर पहुँच कर उसने ब्रेक लगाई. वह सीढ़ियों पर चढ़ गया तथा उसने बाहर लगी घंटी का बटन दबाया. एक गद्दी नौकर श्रीराम द्वारा द्वार खोला गया. उसका चेहरा शान्त को देखकर खिल गया.

"हलो श्रीराम ! माननीय राजकुमार जग रहे हैं ?"

"जी हां श्रीमान, पर वे इस समय स्नानगृह में हैं".

"उन्हें कह दो शीघ्र निपटकर बाहर आ जाएं, मेरे पास एक गरमागरम सूचना है".

पास ही पुस्तकालय में पड़ी कुर्सी पर बैठने के लिए संकेत करते हुए वह एकदम भाग गया. शीघ्र लौटते हुए उसने टेबल पर पत्रिकाएं रख दीं, एक बढ़िया पान रख दिया और नम्र भाव से बोला --

"साहब एक क्षण में आ रहे हैं"

शान्त ने पान चबाना शुरु किया. कमरे में सुगन्धि फैल गई. वह प्रतीक्षा में कमरे में टहलने लगा. तभी कर्ण भी भीतर आ गया.

"नमस्ते शान्त" दोनों ने प्रेम से हाथ मिलाया.

"तुम्हारा गरमागरम संदेश मिला. क्या यहां भी विस्फोट करोगे ?"

"हां हां गरमागरम"

"मैं भी यही अनुमान लगा रहा था. अच्छा, पहले नाश्ता तो कर लें"

"धन्यवाद कर्ण, मेरी तो इस अफरातफरी में भूख जाती रही".

मेज लग गई तथा दोनों खाने के लिए बैठ गए.

"हां, तुम मेरे साथ मिलकर तांबे की धातु पर प्रयोग करोगे ?

हम धातु को ऐसी शक्ति में बदलना चाहते है जो वश में रखी जा सके".

"नहीं शान्त, दीवार की ओर इसका एक कोना मोड़ो, मै तार से दीवार में हुआ छेद देखना चाहता हूं" कर्ण ने कहा.

"लो जैसे तुम कहो ! तार का कोना दीवार की ओर मोड़ दिया. यह एक साधारण सैल है. मै इन सीसे की तारों को घोल में सनी तार से छूता हू तो तुम ध्यान से देखना. इसकी गति आवाज से भी अधिक तेज होगी. सुन तो सकोगे, पर देख भले ही न पाओ. सावधान" !!

"हां ध्यान है" -- कर्ण ने टकटकी लगाई.

शान्त ने सीसे से तार को छुआ और वह तुरन्त अदृश्य हो गई. तब वह कर्ण की ओर मुड़ा और चिल्लाकर बोला -- "कहो गुरु, अब भी कोई सन्देह रह गया है ? धातु उड़ी है कि नहीं ? क्या इस पर कोई और भी दबाव डाला गया था ?"

कर्ण उठा, दीवार की ओर गया तथा उगलियाँ डालकर ईंट में हो रहे छेद को देखा. उसे तसल्ली हो गई तो बोला -- "हां, वह छेद तो ईंट की भान्ति ठोस है और तुमने कोई जादू तो किया ही नहीं यदि इस शक्ति को काबू कर सकते हो तो इसे संजो लो और उद्योग में इसे जोत लो. अब मेरा तेरा सांझा रहा".

"ठीक है परन्तु मै अपनी नौकरी से तो त्यागपत्र दे नहीं सकता पर एक धन्धा स्थापित करने की बात दूर की है और फिर इस काम को चलाना एक आदमी के बस का नहीं. इसमें दोनों का दिमाग लगेगा और काफी-धन भी".

"मुझे स्वीकार है. बहुत-बहुत धन्यवाद मुझे हिस्सेदार बनाने के लिए".

दोनों ने बड़े प्रेम से हाथ मिलाया.

कर्ण ने कहा-- "सबसे पहली तथा तुरन्त करने वाली बात तो है इस घोल के दस्तावेजों की प्राप्ति. यह तो सरकार के अधिकार में है इसका अधिकार प्राप्त करना होगा. इसे तुम कैसे प्राप्त करोगे".

"है तो यह व्यर्थ की चीज जिसका मैंने प्रयोग किया है, पर है सरकारी सम्पत्ति. मैं इस घोल की शीशी को लिफाफे में बन्द करके बाहर ले जाऊगा. यदि पूछताछ हुई तो उसे नाली में बहा दूंगा".

"ऐसे नहीं, हमें तो सरकार की ओर से स्पष्ट आज्ञा दस्तावेज के रूप में लिखवा कर लेनी होगी. ऐसा हो सकेगा ?"

"मेरा विचार तो है और विश्वास भी. एक घंटे में सरकारी नीलामी होने वाली है. हर सप्ताह होती है. मैं इस बेकार पड़ी शीशी को नीलामी में सहज ही ले लूंगा. मेरा ख्याल नहीं कि कोई दूसरा इस नकारी वस्तु पर गिरेगा. मैं इसके लिए विशेष जल्दी करूंगा".

"एक बात और क्या तेरे त्यागपत्र में कोई कठिनाई संभव है?"

"ऊं हूँ" शान्त मुस्कराया -- "वे तो मुझे पहले ही झक्की समझते है. उनको तो बल्कि मुझसे छुट्टी मिल जाएगी".

"ठीक है, तो पहले घोल को हथिया लो"

थोड़ी देर में ही घोल की बोतल बन्द होकर नीलामी के कमरे में पहुँच गई.

शान्त को त्यागपत्र देने में भी कोई कठिनाई न हुई. चारों ओर उसके त्याग पत्र की अफवाह उड़ गई.

जब बोली वाले ने बोली के लिए एक ही शीशी देखी तो उसे निराशा हुई. एक ही बोतल क्यों ? जब कि नित्य पीपे नीलाम होते

थे, परन्तु इस पर सरकारी नम्बर था. एक की ही नीलामी करनी होगी.

"एक कवरे वाली बोतल ! बोलो है कोई ग्राहक ?" वह गुनगुनाया -- "यदि कोई नहीं तो लगा हूं मैं इसे कूड़े में फेंकने".

शान्त उछलकर बोली देने को हुआ परन्तु संकेत पाकर चुप हो गया.

"मेरे पांच रुपए" -- कर्ण ने कहा.

"और कोई, पांच में जाती है"

शान्त झट से बोला -- "दस रुपए".

"दस रुपए...दस रुपए... और कोई, लीजिए चलो - एक-दो-तीन"

और वह सीलबद शीशी शान्त की जायदाद बन गई.

बोली हो चुकने के बाद साकेत बोला -- "हलो, अरे इस महत्वपूर्ण घोल का हमें पता होता तो हम मजाक के लिए ही बोली चढ़ा देते".

"हमारे लिए यह सस्ता ही सौदा है" -- शान्त बोला.

"बिल्कुल सस्ता ही सौदा है" -- साकेत ने हां में हां मिलाई -- "परन्तु 'हम' से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?"

"साकेत, मेरे मित्र [illegible] कर्ण [illegible]"

"हलो कर्ण, पर [illegible]"

"हां भाई, तुम्हा[illegible] -- शान्त ने कहा -- "कुछ देर और इन्तजार करो फिर इस कूड़े-कर्कट के करिश्मे देखना".

दोनों ने किराए की गाड़ी ली और कर्ण के घर की ओर चल पड़े. मोटर साईकल पर ऐसी अमूल्य शीशी को ले जाना ठीक नहीं था.

कर्ण ने घर पहुँचते ही थोड़ा सा घोल एक छोटी शीशी में डाल दिया और उसे अपनी सेफ में रख दिया. बड़ी शीशी को भवन के तहखाने में रखते हुए बोला -- "खतरा क्यों मोल लिया जाय ?"

"ठीक है" -- शान्त ने स्वीकृति दी. "आइए ! अब काम में जुट जाएं. पहली बात किराए की प्रयोगशाला को देखें".

"ऊं हूँ, पहले कम्पनी का सगठन. यदि समस्या के हल के पहले ही हम चल बसे तो ? एक कम्पनी काफी धन लगाकर बनाई जाए. हम दोनों तो अध्यक्ष और प्रबन्धक हों तथा पांच और अधिकारी नियुक्त कर लिए जाएं. द्युति के पिता को भी लिया जा सकता है. रही मूलधन की बात वह मैं लगा दूंगा. तुम परामर्श दाता भी होंगे तथा घोल का भी प्रबन्ध करोगे".

"मूल धन तो काफी चाहिए"

"उसको मै स्वय देख लूगा" -- कर्ण ने कहा -- "मुझे पता है परीक्षण के लिए कितना कुछ चाहिए, अधिकारियों का वेतन, अन्तरिक्ष-यान का निर्माण तथा भट्टी इत्यादि के लिए कितना धन चाहिए. अभी बैठक बुलाते है".

तभी कर्ण ने कवीन्द्र को बुलाया जो उसकी जायदाद का जुम्मेदार था. शान्त को उसकी बातों से मालूम हुआ कि राणा कर्ण कितनी सामर्थ्य का व्यक्ति था.

बैठक बुलाई गई और 'शान्त-कर्ण इजीनियर्स कम्पनी' अस्तित्व में आई. उसके लिए सुरक्षित स्थान अभी कर्ण का पुस्तकालय ही था.

"कम्पनी का कार्यालय यही ठीक है ?" कर्ण ने पूछा

"यही ठीक है. अलग, गोपनीय स्थान तथा हर सुविधा यहां उपलब्ध है. बहुत खुली जगह".

"पक्का !! अब काम में जुट जाएं"--शान्त ने प्रस्ताव रखा.

5. डॉक्टर केशानी का षड्यंत्र

डॉ. केशानी कद का लंबा, हट्टा-कट्टा तथा तगड़ी काठी का युवक था. शान्त की तरह उसके बाल घने तथा काले थे, भूएं भी बहुत काली तथा नाक तीखी थी. तीस वर्ष में ही वह अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ युवक गिना जाता था.

नीलामी के बाद साकेत केशानी की प्रयोगशाला में गया. डॉक्टर अपने यन्त्रों से जूझ रहा था.

"मित्र" -- वह बोला "शान्त के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ? उसका दिमाग सही है ?"

"कैसे ?" बिना ऊपर देखे वह बोला -- "वह तो दिन-रात अपने काम में जुटा हुआ है, बिना आराम और खान-पान की ओर ध्यान दिए. मैं तो कचहरी में भी कह सकता हूं कि वह अत्यन्त बुद्धिमान खपती है".

"देखा, कल कैसे उसने एक कीमती घोल को कूड़े की बोतल में डालकर सीलबद करके नीलाम करवाया तथा छुड़वा लिया. उसमें डॉ. कर्ण को आगे कर दिया".

"तभी तुम उसे बुद्धू कहते हो" -- डॉ. केशानी ने कहा -- "डॉ. कर्ण उसके साथ धन्धे में कैसे फंस गया ?"

"तुम नहीं जानते वे दोनों काफी दिनों से घनिष्ठ मित्र बने हुए हैं ? नीलामी की बोतल को वे किराए की गाड़ी लेकर सीधे कर्ण के बंगले में पहुंच गए".

साकेत चला गया. डॉ. केशानी अपनी मेज की ओर लपका और फोन पर नम्बर घुमाया.

"वाकेश, केशानी बोल रहा हूं, मैं वहां पहुंचते ही विशेष बात करना चाहता हूं -- फोन पर बात नहीं हो सकती".

उसने प्रयोगशाला से सीधी कार्यालय 'विश्व स्टील संस्थान' की ओर दौड़ लगाई.

"कैसे हो ?" वाकेश ने बिठाते हुए कहा -- "घबराए से हो ?"

"एक ऐतिहासिक घटना. उस अमूल्य पदार्थ को हम हथियाना चाहते हैं. तुम्हें मेरे कथन में विश्वास है ?"

"पक्का विश्वास है डॉक्टर साहब ! हम आपको बहुत देर से जानते हैं और आपने तो हमारी कई बातों में सहायता भी की है".

"कहो, कैसा रहेगा ? यह महत्वपूर्ण सौदा सहज में ही बन सकता है. केवल एक जान लेनी होगी तथा साधारण चोरी कोई बड़ा काम नहीं".

"डॉक्टर, मारने वाली बात मत करो. दुर्घटना नाम दे सकते हो".

"मैं तो स्पष्ट वक्ता हू, बात घुमानी नहीं जानता. मैं इसलिए आया हूं कि हमारे विभाग के शान्त ने अकस्मात अणु-शक्ति की खोज कर ली है".

"थोड़ा और स्पष्ट करो".

"एक प्रलयंकारी खोज"

"ओह ! " वाकेश हैरान हुआ.

"तुम तांबे के घोल की विनाशकारी शक्ति का अनुमान नहीं लगा सकते".

"शान्त तो सिर फिरा है" -- वाकेश बोला.

"उसके मित्र कर्ण को भी उसी श्रेणी में गिनते हो ? उन्होंने अमूल्य तांबे के घोल को सरकार से नीलाम करवाकर स्वयं खरीद लिया है वे लोग कच्ची धातु के नहीं बने हुए. मेरी तो नींद हराम हो रही है".

"फिर ?" वाकेश ने पूछा

"हमें उस कीमती शीशी को कब्जे में लेना है".

"उनसे खरीद नहीं सकते ?"

"वे ऐसे अनुपम एवं दुर्लभ पदार्थ को हमें कहां देने लगे. उसे हथियाने का मूल्य मुंह मांगा दूगा" केशानी ने प्रस्ताव रखा.

"तो उसे चुराना ही पड़ेगा ?" वाकेश ने पूछा.

"केवल आधा चम्मच भर सारा नहीं ताकि उन्हें शक न हो. यहां से दूर चीन से लगती हुई सीमा पर प्रयोगशाला स्थापित कर दो. परवाह नहीं उसमें कितने लोगों को खत्म कर देना पड़े अथवा बेघर. तुम्हारे जुम्मे काम रहेगा. अच्छा नमस्ते".

जाते समय केशानी ने पीछे से द्वार बंद कर दिया. वाकेश ने जेब से एक यन्त्र निकाला, बटन दबाया और होठों के साथ लगाकर बोला 'प्रकाश ?'

"जी हां, बोल रहा हू"

"राणा कर्ण के पास कहीं इधर-उधर तांबे के घोल की एक छोटी सी शीशी पड़ी है".

"कुछ अधिक जानकारी ?"

"नहीं" -- वाकेश कहता गया -- "यदि उस बोतल को खाली करके वैसे ही जल से भरकर रख दिया जाए तो किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता".

"संभवतः किसी को भी सन्देह नहीं होगा, श्रीमान्, अच्छा नमस्कार" !

6. द्युति द्वारा निमंत्रण

शान्त दिन निकलते ही काम शुरू कर देता था तथा कारीगरों का काम भी शाम तक देखता. कर्ण को वह हर रात को सोने से पूर्व काम में लगा हुआ अथवा कम्प्यूटर से जूझता हुआ नजर आता. कर्ण की चेतावनी के बावजूद भी वह अपनी सेहत का तनिक भी ध्यान नही रखता था. वह अपनी मंगेतर को भी नहीं भूला था, परन्तु एक के बाद एक समस्या उसे घेरे रहती थी. इस प्रकार दिन निकलते गए.

द्युति काफी उदास रहने लगी. उनकी सगाई हुए एक सप्ताह ही तो हुआ था और यह मंगनी भी कैसा ? उससे पूर्व तो उनकी भेंट बल्कि होती रहती थी. जबसे विस्फोट वाली घटना हुई तब से शान्त का कुछ पता ही नहीं.

एक दिन परेशान-सी द्युति घूमने के लिए निकल पड़ी. वसन्त ऋतु का भी उसके लिए कोई आकर्षण नहीं था. गम्भीर मुद्रा में चलते हुए उसे पीछे से कर्ण के बुलावे का भी ध्यान न आया. अन्त में कर्ण ने उसे जैसे निद्रा से जगा दिया हो, बुलाते हुए कहा

"मैं शान्त के पास से ही आ रहा हूं" वह बोला -- "तुम ने ऐसा एकाग्र चित व्यक्ति कभी देखा है ? उसके महान् वैज्ञानिक बनने का रहस्य भी यही है. उसने तो भूख हड़ताल भी कर रखी है. त्यागपत्र के विषय मे उसने तुम्हें कुछ बताया है ?"

"उस घटना के बाद मुलाकात ही कहां हुई है ? उसने ऐसा कुछ कहा तो था, परन्तु मुझे तो उसकी बातें अनर्गल-सी लगीं".

"उस विषय में न वह और न मैं ठोस बात कह सकते है, परन्तु भावी रूपरेखा के विषय में मैं कुछ बता सकता हू".

"मैं आपके मुँह से ही सुनना चाहूँगी".

"शान्त ने ऐसी चीज ढूँढी है जो तांबे को शक्ति में बदल सकती है. उसी शक्ति के कारण प्रयोग करते समय उसका टब सीधा उड़ गया".

-"आपके कहने के बावजूद भी मुझे यह बात जँची नहीं".

"रुको द्युति" -- कर्ण ने कहा -- "जो घटना सामने घटे वह झूठी कैसे होगी ? मैंने स्वयं देखा है. हम एक उचित वाहन में उसका पीछा करने की योजना बना रहे हैं".

कर्ण रुका. वह युवती के चेहरे पर देखता रहा, पर वह चुप रही. वह कहता गया -- "अन्तरिक्षयान के निर्माण में मेरा भी हिस्सा होगा. मेरे पास धन है तथा शान्त के पास विचार. हम ग्रीष्म ऋतु से पहले ही उस यान द्वारा धरती से बहुत दूर उड़ान भरने की सोच रहे हैं".

तब उसने द्युति से इस बात को गुप्त रखने के लिए कहकर जो कुछ प्रयोगशाला में उसने देखा था बता दिया.

"ऐसी विशेष घटना के विषय में तो उसने मुझे बताया होता" -- द्युति बोला.

"वह चाहता था भी और अब भी चाहता है. उसने तुम्हें नहीं भुलाया. मैं तो तुम्हें बताने आ रहा था कि उसने अपनी धुन में शेष सब कुछ त्याग दिया है. इस ढंग से तो उसकी सेहत चौपट हो जाएगी. उसे मिलकर समझाएं ?"

"मैं उपाय जानती हूँ" -- उसने आह भरी -- "मैं उसके सारे शरीर में अन्न ठूस दूंगी जिससे कि वह बाद में अवश्य सो जाएगा".

यह सुनकर कर्ण को आश्चर्य हुआ.

"अभी तो तुम इन बातों को अटकलें कह रही थीं".

"संभवतः आपने पूरा विवरण नहीं लिया" -- वह मुस्कराई

"वहुत सी वातों का शायद आपको भी पता नहीं आप चलिए और मैं भी शीघ्र पहुँच रही हूं".

दुति शाम को वहां पहुंच गई.

"हलो, शान्त कैसे कट रही है ?" वह बोली.

"अरे द्रुति"! वह एकदम चौंका उसने युवती का आलिंगन किया.

"मैं तो पागल-सी हो रही थी" -- वह रोष प्रकट करने लगी "मुझे आप पर इतना क्रोध आ रहा है".

"प्रिये ! मैं रोज ही तुम्हारे पास जाने के लिए समय निकालने का भरसक प्रयत्न करता रहा हूं, परन्तु क्या बताऊं एक क्षण भी तुम्हारे पास जाने के लिए नहीं मिल पाया. कितना निष्ठुर हूं ?"

"चलो छोड़ो, मैं इसके बावजूद भी तुमसे प्यार करती हूं. बस अब काम बन्द करो और चलो मेरे साथ. तुम्हारा दोनों का खाना उधर होगा".

शान्त के नेत्र अभी भी कम्प्यूटर पर ही गढ़े हुए थे.

"बस मैंने कह दिया है और काम नहीं" -- वह दृढ़ता से बोली "क्या लड़ाई करनी पड़ेगी ?"

"काम बन्द करता हूं अरे ! तुम्हारे साथ लड़ाई की तो कभी सोच भी नहीं सकता".

"न मैं ही कभी ऐसी कल्पना कर सकती हूं"

वे दोनों ही वाहों में बाहे मिलाकर कमरे में चले गए.

कर्ण ने भी निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और वस्त्र बदलने की सोचने लगा.

"कोई जरुरत नहीं, जैसे हो वैसे ही" -- द्रुति ने हठ किया और कर्ण से बोली --

"सारंगी अवश्य साथ लेते आना"

"मेरा सौभाग्य होगा. आपकी श्रेष्ठ तान सुनने का"

"जैसे भी बन पाएगा बजाऊंगी" -- वह मुस्कराई -- "हां खाने पर दोनों ने ठीक साढ़े सात बजे पहुँचना है".

टेबल पर बैठते ही द्युति ने शान्त के चेहरे पर कुछ परिवर्तन पाया चेहरा कुछ पीला पड़ गया था. आंखों के कोनों में धारियां नजर आ रही थीं. और नेत्रों के नीचे कुछ काले धब्बे भी.

"तुम तो कड़े ढंग से काम में जुटे हो, कुछ शरीर का ध्यान भी कर लो".

"वाह ! मैं तो बल्कि पहले से भी अधिक स्वस्थ हूं".

वह मुस्कराई पर उसके चेहरे से चिन्ता प्रकट हो रही थी.

खाते समय योजना पर कोई चर्चा नहीं हुई. खेलों व तैराकी की बातें ही होती रहीं. शान्त की प्लेट में इस प्रकार का भोजन लगा हुआ था जो उसने कई सप्ताहों से नहीं खाया था.

भोजन के बाद द्युति के पिता ने कर्ण को एक दुर्लभ पोथी दिखाई. उसकी मां ने लेख समाप्त करना था. वह ऊपर की मंजिल में चली गई.

द्युति ने कहा-- "आप लोगों के चक्कर में मैं सारंगी पर अभ्यास भी नहीं कर पाई. क्या मेरे अभ्यास करने तक आप प्रतीक्षा करेंगे ?"

"क्यों मजाक उड़ा रही हो ? हमारा सौभाग्य होगा. अपनी मधुर वीणा से वातावरण को रसीला बना दो"-- कर्ण ने कहा.

वीणा मँगवा ली गई. उस सरस्वती देवी की उंगलियां छूते ही मीठी ध्वनि से वातावरण भर गया. श्रोताओं के सिर झूमने लगे. द्युति तन-मन की सुध भूलकर वीणा में रम गई.

वह कुछ रुकी और पुनः तान छेड़ने लगी तो उसका ध्यान

शान्त पर गया. वह थकान के वाद सुरीली तान की मस्ती में सो रहा था.

विश्वास होने पर कि वह सो गया है दुति पजों के वल अध्ययन कक्ष में गई और धीरे से वोली -- "वे सो रहे हैं"

"मुझे भी विश्वास है" -- पिता ने कहा.

वे लोग उसे देखने गए. वह गहरी नींद सो रहा था. केवल सास से पता लग रहा था कि वह सो रहा है.

"कैसे अन्दर ले जाएगे ?" पिता ने पूछा.

"इन्हें आराम से सिर और पाव की तरफ से उठा लें, पिता जी, कही नींद न खुल जाय "

'वेटी, इसे तो अव डडे भी नहीं जगा सकते'.

दुति के पिता तथा कर्ण ने सहज ही उसे उठाकर पलंग पर लिटा दिया. उसे कम्वल तथा तकिया दे दिया गया. तब वे दवे पांव कमरे से वाहर हो गए.

मध्याह्नोतर शान्त अपनी प्रयोगशाला में पहुँचा. कर्ण ने नमस्ते की, परन्तु उसे ढीला सा उत्तर मिला.

"क्यों मजाक उड़ाते हो मेरा कर्ण ? मुझे स्वयं झेंप आ रही है कि आप लोगों ने मुझे पकड़कर दुति के घर में पलंग पर लिटा दिया".

"हम लोगों ने ठीक ही तो किया और आगे भी ऐसा ही करेंगे यदि तुमने अपनी सेहत का ध्यान रखे विना जान तोड़कर काम किया".

"क्यों व्यर्थ में वात को कुरेदते हो ? तुम्हें पता नहीं मैं किस प्रकार मजे से टागे पसार कर सोता हूं तथा हर रविवार को दुति को मिलने जाता हूँ ?"

"यदि ऐसी वात है तो वढ़िया है"

"अरे भाई, मुझे तो अपने सिद्धान्त को प्रयोगशाला में सिद्ध करके दिखाने की चिन्ता लगी हुई है कि एक छोटी सी बिजली की तार का शक्ति पैदा करने में क्या प्रभाव हो सकता है".

वे दोनों ही अपनी समस्या के समाधान के लिए परस्पर वाद-विवाद करते रहे और कम्प्यूटरों द्वारा आँकड़े नोट करते रहे.

उन दोनों ने गणित के आँकड़े तैयार कर लिए और तब वे इस निर्णय पर पहुँचे कि शक्ति को नियन्त्रित किया जा सकता है. उस शक्ति से कोई भी बोझ उठाया जा सकता. उस शक्ति से अन्तरिक्षयान भी उड़ सकता है. इससे भारी विस्फोट भी किया जा सकता है. और अत्यन्त विनाशकारी बम का निर्माण भी. इसके अन्य विस्मयकारी उपयोग भी हो सकते हैं जिनका कि मानव अभी अनुमान नहीं लगा सकता.

7. शान्त द्वारा प्रदर्शन

"कहो डॉक्टर केशानी" -- साकेत ने पूछा "[illegible] टी.वी. पर समाचार सुना है ?"

"कैसा ?"

"किसी ने पहाड़ में कहीं [illegible] है/ उससे एक पूरा का पूरा नगर ही गायब [illegible] गहरा गड्ढा मात्र रह गया है. न कोई प्राणी जीवित बचा है".

"वहां पर्वत में अणु बम से किसी का क्या वास्ता ?" केशानी बोला.

"नहीं, अणुबम तो नहीं था, न रेडियोधर्मिता, न कोई धमाका हुआ. चूं तक भी सुनाई नहीं दी. सभी वैज्ञानिक हैरान हैं".

"विस्मयकारी सूचना तो है ही"-- केशानी ने अपना काम करते हुए कहा.

साकेत ने जब देखा कि केशानी को उसकी खबर में कोई रुचि नहीं तो वह चलता बना.

"किसी सिरफिरे का यह काम है. उसे स्वयं भी इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा" -- केशानी गुनगुनाया तथा फोन उठाकर बोला -- "प्रवर्त्तक, डॉक्टर बोल रहा हूं. मुझे कहीं से बुलावा आया है. पार्टी को घर भेज देना. धन्यवाद"

उसने दफ्तर छोड़ दिया और अपनी कार द्वारा आध घंटे में घर पहुंच गया. वहां वह अकेला ही रहता था सिवाए एक बजुर्ग जोड़े के जो उसके नौकर थे.

बाद दोपहर चँवर अखबार पकड़े हुए वाकेश के निजी दफ्तर में आया. उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था.

"वाकेश, लो इसे पढ़ो जरा"

वाकेश ने पढ़ा तथा उसका रंग भी बदल गया.

"हमारा प्रयोग ही तो है"

"हां, हमारा ही" -- चँवर ने भी स्वीकार किया.

"अरे नालायक ! क्या तुमने उसे थोड़ी मात्रा में प्रयुक्त करने को नहीं कहा था ?"

"बिल्कुल कहा था. उसने तांबे का केवल एक ग्राम तक के प्रयोग का आश्वासन दिया"

"अच्छा !" फोन की ओर मुड़कर वाकेश ने नम्बर घुमाया, डॉ. केशानी तथा अन्य लोगों को बुलाया "मैं वाकेश बोल रहा हूं आप लोगों को शीघ्र मिलूंगा".

वाकेश पहुँच गया और डॉ. केशानी के पास बैठकर बोला--

"डॉक्टर, तुमने ठीक ही कहा था. हमारा आदमी उस यन्त्र को

ठीक ढंग से नहीं चला सका"

"कुछ ऐसा ही लगता है"-- केशानी ने जेब में कागज डालते हुए कहा.

"अब क्या करना है ?" वाकेश ने पूछा.

"जो घोल तुम चुरा कर लाए थे पहले तो उसके विषय में सोचना है".

"मैं चुराकर लाया था ! ऐसी भाषा क्यों बोलते हो, डॉक्टर?"

"मैं स्पष्ट वक्ता हूं. लेपा-पोती करना नहीं जानता. यह बताओ कि शीशी तुम्हारे पास है ?"

"हां, यह रही"

"शेष कहां है" ? डॉक्टर ने पूछा.

"केवल इतना ही मैं ढूंढ पाया था. आधा चम्मच मैंने घोल शीशी में ही छोड़ दिया था और शीशी पानी से भरकर वैसी की वैसी ही रख दी थी."

"आधी ! यहां तो शीशी का बीसवा भाग है. उसके पास तो काफी बची हुई है. तुम्हारे चोर ने तो हमें बीच में ही लटका दिया है".

"मैंने तो यह काम प्रकाश को सौंपा था जिसे तुम खूब जानते हो" तो वाकेश ने कहा.

"तभी तो मैं किसी दूसरे को ऐसा काम सौंपता नहीं. तुम्हारा धूर्त प्रकाश असली शीशी तो ढूंढ नहीं पाया. खैर ! अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा आज रात को ही तुम्हारे गुंडों को साथ लेकर स्वय जाता हूं"

"तुम क्या करोगे ?" वाकेश ने पूछा.

"शान्त को तो गोली मार दूंगा -- सेफ खोलूंगा, घोल निकाल

लूगा, योजना के सम्वन्धित कागज भी तथा खुले पैसे भी जो गुंडों को दे दूंगा".

"नहीं ऐसा नहीं डॉक्टर यह नीचता है. यह तो अन्तिम हथियार लेना चाहिए".

"मै कहता हू यह काम पहले करो. शान्त तथा कर्ण दोनों की जटिल जोड़ी है उन्हें रास्ते से हटा दो".

"पहले इस घोल पर प्रयोग करके क्यों नहीं देख लेते ? बाद में शान्त यदि आपत्ति करता है तो हम कहेंगे यह, हमारी पहले की खोज है".

डॉक्टर केशानी ने कहा -- "वाकेश, यह तो देरी का धन्धा है. इतना समय है कहाँ ? पुलिस ही तो कुछ दिन हमारे पीछे पडेगी न, परन्तु उन्हें सुराग तो मिलेगा नहीं. सिवाए कर्ण के किसी को भी पता नहीं होगा और तब जब कि वह जिन्दा रहेगा. वह अकेला कुछ कर भी नहीं पाएगा".

वाकेश डॉक्टर से सहमत तो था, परन्तु ऐसा भद्दा साधन अपनाने में नहीं. अतः डॉक्टर ने प्रकाश को बुलाया और उसे घोल की शीशी व सभी सम्वन्धित कागज चुरा लाने को कहा. तब वाकेश ने डॉक्टर से छुट्टी मांगी और चलता बना.

विस्फोट करके दोपहर के बाद शान्त हाथ में लेख लिए हुए राणा कर्ण के पास गया.

"मुझे समस्या का कुछ समाधान मिल गया है. कर्ण तुम्हारे तीन इच्छित उत्तर मिल गए हैं-- सफल परिवर्तन, न कोई रेडियोधर्मिता न धुआं-धूल, न कोई भय, न किसी सुरक्षा की जरुरत".

"मै भी कुछ परिणामों पर पहुँचा हूँ"--कर्ण ने बताया-- "इस घोल से शक्ति पैदा होती है तथा यह स्वयं अप्रभावित रहता है".

शान्त को आगे सुझाव देते हुए कर्ण ने बात जारी रखी -- "शान्त, पहले हम तुम्हारे कम्पास को ही ले लें. इसे धरती पर केन्द्रित करने से हम चाहे जिस लोक में हों अपने स्थान पर लौट सकते हैं तथा ब्रह्माण्ड में कहीं भी कोई वस्तु हो उसका पता लगा सकते हैं".

शान्त ने कहा -- "बढ़िया है, फिर तो मुझे कभी इसका ध्यान ही नहीं आया. मैं तो यह बताने आया था कि मैंने एक ऐसा नमूना तैयार किया है जिसे सहज ही सँभाला जा सकता है. इसे देखना चाहोगे ?"

"अवश्य" कर्ण झट बोला.

अभी वे देखने जा ही रहे थे कि श्रीराम ने द्युति व उसके पिता के आने की सूचना दी.

"हलो" -- द्युति मुस्कराई, उसकी गालों में गड्ढे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे "पिता जी और मैं इधर आए थे ताकि देखें आप लोग क्या कुछ कर रहे हैं."

"बिल्कुल ठीक समय पर आप लोग पहुँच गए हैं" -- कर्ण ने स्वागत करते हुए कहा -- "शान्त ने एक नमूना तैयार किया है जिसका प्रदर्शन वह करने जा ही रहा था. आइए आप भी देखिए".

वे लोग मैदान में गए. शान्त ने सब सामान तैयार कर रखा था. उसने यन्त्र परस्पर जोड़ दिए. स्टील की तार से उसने और तारें जोड़ीं तथा उन्हें घोल में डुबो दिया. तार के एक सिरे को उसने मजबूत हाथों से पकड़ लिया तभी उसने सरकाने वाले यन्त्र (ग्लाइडर) को हरकत दी.

तभी कड़-कड़ की ध्वनि हुई और शान्त सैंकड़ों फुट ऊंचा उड़ गया जहां कुछ क्षणों तक वह निस्तब्ध लटका रहा. तब दाएं-बाएं घूमकर उसने आठ का अंक बनाया. कुछ मिनटों तक वह इस

त्कार प्रदर्शन करके शक्ति-सचालित डोंगी में वापिस धरती पर लौट आया. सभी यह देखकर दंग रह गए.

"देखा चमत्कार !" शान्त बोला तथा एक और तार को हरकत में लाकर उसने छोड़ दिया. तार आगे-आगे दौड़ने लगी और वह पीछे-पीछे उसे पकड़ने दौड़ा. कर्ण भी तार को पकड़ने दौड़ा

"तुम इसे मत छूना"-- शान्त चिल्लाया "मैं ही इसे संभालता हू".

शान्त इस सारे खेल का इस समय नायक बना हुआ था. सभी उसे देख खिलखिला कर हँस रहे थे. तांबे की छड़ उनके सामने हवा में इधर-उधर झूल रही थी. तभी शान्त उनके समक्ष जाकर खड़ा हो गया. उन सभी की हँसी नहीं रुक रही थी.

"मुझे स्वयं इसमें शक था" -- शान्त ने कहा -- "परन्तु मुझे आशा नहीं थी कि प्रयोग इस प्रकार सफल रहेगा".

"कहीं चोट तो नहीं आई शान्त ?" द्युति ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा.

"ऊं हूं, बिल्कुल नहीं"

"मेरा तो एक बार रंग ही फक हो गया था. प्रदर्शन यदि दोबारा हो जाए तो मैं फिल्म ले लूं"-- द्युति ने प्रस्ताव रखा.

"द्युति, अब के मजाक वाली बात नहीं होगी" -- पिता ने कहा.

"दूसरा प्रदर्शन तो अब होने का नहीं" -- शान्त ने घोषणा की "अब के तो अन्तरिक्ष-यान ही अन्तरिक्ष में उड़ेगा".

द्युति और शान्त घर की ओर लौटने को हुए तो द्युति के पिता ने पूछा --

"इस प्रयोग से कुछ आर्थिक लाभ उठाने का भी विचार है

क्या ? या शान्त को केवल अन्तरिक्ष यान बनाने की ही धुन सवार है".

"जी हां" -- कर्ण ने उत्तर दिया -- "हमने तो इंजीनियर लगा रखे हैं जो कुछ सप्ताहों से बिजली के उत्पादन में जुटे हुए है सफल होने पर बिजली कारखानों में बेचेंगे. इसके उत्पादन से बड़े-बड़े कारखाने भी मुकाबले में हमसे पिछड़ जाएंगे".

"वह कैसे ?"

"योजनाओं की खपत के लिए तो संस्थाओं को शक्ति की जरूरत होगी ही. व्यक्तिगत रूप से भी हम लोग बिजली का व्यापार करेंगे."

शाम गुजर गई. अतिथि जब जाने को हुए तो द्युति ने पूछा -- "जो मशीन आप लोग तैयार कर रहे हैं उसका नाम क्या होगा ?"

"अन्तरिक्ष-यान" -- शान्त का उत्तर था.

"सभी ऐसे यान अन्तरिक्ष-यान ही कहलाते हैं, परन्तु इस विशेष यान का नाम 'जुदाई मशीन' होना चाहिए"?

"सर्वथा उचित नाम सुझाया तुमने !! यही ठीक है" -- कर्ण ने प्रसन्नता व्यक्त की.

तभी द्युति के पिता ने जेब से अखबार निकाला और बोला "इस अखबार में विस्फोट की सूचना है. यह बात सच्ची भले ही न हो परन्तु आप वैज्ञानिकों के लिए अत्यन्त रोचक तो है.

शान्त द्युति को कार में बिठाने गया. उसके लौटने पर कर्ण ने बिना कुछ कहे उसे एक कागज थमा दिया.

"इसे पढ़ा है ? किसी और ने भी विस्फोट किया है. है न गंभीर सूचना ?"

"बिल्कुल, पर हमारे वाला पदार्थ तो दुर्लभ है. इसका तो लोग अस्तित्व ही नहीं मानते. इसकी तो किसी वैज्ञानिक को भनक

तक भी नहीं" - शान्त ने स्वीकार किया.

"इसकी सच्चाई का हमें पता लगाना चाहिए" -- कर्ण ने कहा और भीतर जाकर बंद शीशी को देखकर आया. "यह तो वैसी ही भरी हुई मालूम होती है" -- वह बोला.

"मैं घोल की मात्रा को शीशी में आक लेता हूं" -- शान्त बोला.

उसने जाकर शीशी को परखा तो सचमुच ही द्रव्य की मात्रा में कमी पाई गई. वह लगभग आधी रह गई थी.

"देखा कर्ण, आधी शीशी पानी से भर रखी है" -- शान्त ने कहा "यह किसका काम हो सकता है ?"

"तुम्हारे दर्शकों में से ही कोई हो सकता है. वहा कौन-कौन थे"?

"वहां आने-जाने वाले तो कई थे परन्तु पांच वैज्ञानिक तो विशेष कहे जा सकते है. साकेत, डान, केशानी.... "

"बस ! बस !! समझ गया. इसमें डॉ. केशानी की ही चाल हो सकती है. पक्की बात समझो".

कर्ण ने फोन उठाया और डायल घुमाया.

"डॉ. कर्ण बोल रहा हूं. मुझे दुर्लभ धातुवीय प्रयोगशाला के डॉ. केशानी के बारे में पूरा-पूरा ब्यौरा तुरन्त चाहिए. दो-तीन विश्वास पात्र संतरी भी. बहुत जल्दी है".

8. डॉ. केशानी द्वारा संतरियों की हत्या

शान्त और कर्ण ने काफी समय लगाकर कम्पास (वस्तु निर्देशक यन्त्र) का विकास कर लिया जो कि हजारों मीलों तक भी एक

वारीक शीशे के टुकड़े को भी बता सकती थी. इसके अतिरिक्त उन्होंने विस्फोटक गोलियां भी तैयार कर लीं और तत्सम्वन्धी सिद्धान्तों वाले कागज भी संभाल लिए. उन्होंने इन सभी बातों को गुप्त रखा.

तव वे हेलीकाप्टर में प्रयोग करने के लिए गए वहां जहां किसी प्रकार की हानि की संभावना नहीं थी. वहां उन्होंने एक विस्फोट भी किया जो आशातीत था. उससे एक रुंड-मुंड़ पेड के टुकड़े-टुकड़े हो गए. वे दोनों हैरान हुए.

"अभी तो छोटा-सा विस्फोट ही हुआ है" -- शान्त ने आश्चर्य व्यक्त किया.

"संभलकर शान्त ! अब किसे निशाना वनाओगे ?"

"घाटी के पार एक चट्टान को"

पिस्तौल का धमाका हुआ तो चट्टान खंड-खंड हो गई. इसमें अणुबम वाली कोई वात नहीं थी. यह असाधारण चीज भी नहीं थी.

तभी वे दोनों पीछे को लुढ़क गए. कुछ दूरी पर वादल से घिर गए और चारों ओर छाने लगे. उस विस्फोट की भारी शक्ति को देखकर वे दोनों भयभीत हो गए.

"इससे अधिक शक्तिशाली विस्फोट तो मैं नहीं करुंगा" -- शान्त ने घबराहट व्यक्त की

उधर डॉ. केशानी के निर्देशानुसार प्रकाश तथा वाकेश योजना के अनुसार द्रव्य को चुराने की तैयारी कर चुके थे. वाकेश सारी योजना प्रकाश को समझा चुका था.

"मैं कुछ नहीं कर सकता" प्रकाश का उत्तर था.

"अभी तुमने कुछ किया ही नहीं ?" वाकेश ने कहा

"उन दोनों से सौदा मुश्किल है. मेरे वश से परे" -- प्रकाश का उत्तर था.

"एक तो उनमें से काबू आ सकता है" -- वाकेश ने कहा -- "तुम जो कहो सो मिलेगा. उनका पत्ता काट दो. अच्छा कल मिलेंगे".

दूसरे दिन वाकेश प्रकाश के कार्यालय में जा धमका.

"उड़ाकर रख दो, प्रकाश ! क्या तुम यह भी नहीं कर सकते ?"

"कठिन काम है फिर भी यत्न करुंगा" -- प्रकाश ने आश्वासन दिया तथा जाकर कर्ण के तीन सन्तरियों को गोली से उड़ाकर लौट आया

वाकेश ने डॉ. केशानी को बुलाया और बातचीत के बाद अपनी असफलता का भी वर्णन किया.

तब केशानी ने कहा -- "अब मैं स्वयं ही उपाय करता हूं. तुम तो असफल रहे हो. लाओ मेरा हेलीकाप्टर".

अपने हेलीकाप्टर में केशानी ने उड़ान भरी और पश्चिम से उत्तर की ओर चक्कर काटा

श्रीराम तथा दो संतरियों ने इंजन की ध्वनि से ऊपर देखकर अनुमान लगाया कि कर्ण का हेलीकाप्टर ही हो सकता है. वह धीरे-धीरे उन्हीं की ओर उतरा. तुरन्त एक व्यक्ति जो शान्त की शक्ल का था उसमें से निकला और उनकी ओर लपका.

वह था डॉ. केशानी जो तीनों पड़े हुए व्यक्तियों को ध्यान से देखने लगा. दो पहरेदार तो मर चुके थे तथा श्रीराम अन्तिम साँस ले रहा था.

उसने दस्ताने पहने, अन्दर गया, सेफ खोली और शीशी उठाई, पर बाकी का घोल तो तहखाने में बंद था. अतः वह विवश था.

वह शीघ्र ही हेलीकाप्टर से लौट आया और अपने कक्ष में फाइलें देखने लगा.

शाम को शान्त तथा कर्ण लौटे तो उनकी निजी हवाई पट्टी की रोशनी बुझी हुई थी. वे किसी प्रकार उतर कर कमरे की ओर लपके. तभी उन्होंने धुंधली सी आवाज सुनी. शान्त ने फ्लेश लाइट फेंकी तथा पिस्तौल संभाली. वह श्रीराम पर झुका. शेष दोनों मर चुके थे. वे उसे कमरे में ले गए. शान्त ने उसकी प्राथमिक चिकित्सा की. कर्ण डॉक्टर को बुला लाया तथा उसकी प्रीतम से बातचीत होती रही.

शान्त तथा कर्ण का हृदय जल रहा था तथा उनके अंग फड़फड़ा रहे थे. तब शान्त बोल उठा -

"जो व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को इस तरह मरता छोड़कर भाग जाता है वह भेड़िया है. उसे तो तुरन्त गोली से उड़ा देना चाहिए बल्कि उसका अंग-अंग चीर देना चाहिए".

"यह सजा भी कम है" -- कर्ण बोला -- "छोड़ेंगे तो हम हैं नहीं उसे पैसे से भी काम हो सकता है".

डॉक्टर के आने से उनका तनाव कम हुआ. साथ नर्स भी थी. डॉक्टर ने जांच की और बोला -

"खोपड़ी पर थोड़ी चोट आई है, कर्ण. वह कुछ ही दिनों में बिल्कुल ठीक हो जाएगा".

. पुलिस तथा अन्य अधिकारी भी वहा पहुँच गए थे. काफी भगदड़ तथा पूछताछ होती रही. काफी अटकलें लगाई गईं.

कर्ण ने हत्यारे को पकडने के लिए लाख रुपए का इनाम भी घोषित कर दिया.

9. किराए का गुंडा -- प्रकाश

रातभर जागने के वाद प्रीतम भी शान्त और कर्ण के साथ जा मिला और तीनो ने नाश्ता किया.

"क्या समझ में आया तुम्हें ?" कर्ण ने पूछा.

"वहुत कम" -- प्रीतम का उत्तर था -- "पर जिसने यह किया है उसे तुम्हारी गतिविधियों का पूरा-पूरा ज्ञान था".

"जानते हो जो तीसरा सतरी वच गया है वह तो साक्षी ?"

"हा" जासूस प्रीतम का चेहरा उतर गया.

"वह तो केशानी ही हो सकता है. सेफ तोड़ने में प्रवीण, पर वह हम से वचकर नही जा सकता. हम उसके एक-एक क्षण का पता लगा सकते है".

"कैसे ?" प्रीतम ने पूछा.

"यह रही वह मशीन" शान्त ने कम्पास को सामने रखते हुए कहा -- "केशानी जहा भी जाएगा कम्पास की सुई उसी ओर झुकती जाएगी यह रहस्य की वात है. तुम भी इसे देख सकते हो और ले जा सकते हो".

"विल्कुल ठीक, पर यह काम कैसे करती है ?"

भेदिए प्रीतम को इसके विषय में वता दिया गया. वह इसे लेकर चला गया.

शाम को वह केशानी के पास गया जो वुरी तरह से काम में व्यस्त था कम्पास की सुई उसकी हर हरकत को वता रही थी. डॉक्टर केशानी वाकेश को मिलने गया तो प्रीतम ने वहां भी उसका पीछा किया. वहा जो कुछ हुआ वह ध्यान से नोट करता रहा

सुवह होते ही प्रीतम लौटा तो शान्त और कर्ण उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. श्रीराम ने पट्टी बाँधी हुई थी तथा दूसरे रसोइए की

छुट्टी करके स्वय काम करने का अनुरोध कर रहा था.

"सज्जनो, आपकी कम्पास ने खूब काम किया है" -- प्रीतम ने पूरा-पूरा ब्यौरा दिया.

"मैं तो केशानी को लाठियों से मार-मार कर खत्म कर देना चाहूंगा" -- शान्त ने कहा.

"लाठियों से उसे कोई अन्तर नहीं पड़ता" -- कर्ण की मुद्रा उदास थी.

"क्यों ? हमें विश्वास है कि यह उसी की करतूत है" -- शान्त ने कहा.

"किसी चीज को जानना और बात है, उसे कचहरी में सिद्ध करना और है".

प्रीतम वहां से लौट गया.

"प्रीतम को विश्वास है कि अपराधी पकड़ा जाएगा" -- शान्त बोला.

"उसका कारण है, शान्त ! रिपोर्ट तो कहती है कि उन लोगों का धन्धा आग लगाना, डाके मारना व कत्ल करना है, पर अभी तक वे पकड़े तो नहीं गए" -- कर्ण ने बताया.

"अब तो हमें पता लग गया है. अब वे कैसे बच निकलेंगे ?"

कर्ण ने कहा -- "यदि हम दोनों मर जाएं तब ?"

"तब भी वे नहीं छूट सकते. न ही इस द्रव्य को छिपाकर रख सकते हैं".

डॉक्टर केशानी तथा वाकेश दोनों ही वाकेश के कमरे में परस्पर मिले.

"तुम्हारे इंजीनियर को शक्ति-यन्त्र कैसा लगा ?"

वाकेश ने उत्तर दिया "डॉक्टर, रिपोर्ट तो संतोषजनक है, परन्तु जब तक सारा घोल हाथ नहीं लगता तब तक तो काम

अधूरा ही है. अन्तरिक्षयान की प्रगति कहां तक हुई है ? शान्त तो इसके निर्माण में खूब जुटा हुआ है और उसके पास तावे का घोल भी काफी मात्रा में है".

"वाकेश, हम शान्त का शेप घोल भी हथिया लेने की फिक्र में हैं. हम सफल भी होंगे"-- डॉ. का तुरन्त जवाव था.

वाकेश ने केशानी से कहा -- "यह टेढ़ी खीर है. वे दोनों चौकस हैं और उनका द्रव्य भी सुरक्षित है. और फिर तुम प्रकाश से भी तो सीधी कार्यवाही करने की वात कर रहे थे. उसके निशाने तो चूक गए".

"प्रकाश को भीतर बुलाओ वह योजना वनाने में तो अद्वितीय है, परन्तु उसे ठोस रूप देने में नहीं" -- केशानी ने कहा.

प्रकाश भीतर गया और थोड़ी देर सोचने के वाद बोला -- "हमें कोई आदमी शीघ्र ढूँढना होगा".

डॉ. केशानी ने कहा -- "प्रकाश, दूसरे के द्वारा काम साधने के लिए कई ढंग अपनाने पड़ते हैं, साम, दाम, दंड और भेद. उन्हें लोभ भी दिया जा सकता है".

"क्या दाम से वात नहीं वनती ?" प्रकाश ने पूछा.

"नहीं, शान्त और कर्ण धन के लालच में आने वाले नहीं हैं"

"फिर ?" प्रकाश वोला.

"द्युति को अपने अन्तरिक्ष यान में उड़ा ले जाओ और अपनी मृगनयनी के साथ कैद करके पता ही मत लगने दो. वाद में वता देना कि वह मगल ग्रह पर पहुँच चुकी है. तव वे लोग पुलिस को भी सूचित नहीं करेंगे. ठीक है न ?"

वाकेश ने कहा -- "यदि वे लोग हमारा पीछा भी करेंगे तो कोई अन्तर नहीं पड़ेगा ?"

"तनिक भी नहीं" -- डॉ. केशानी ने दृढ़ता से कहा --

"अच्छा होगा यदि वे मर मिट जाएं और दुनिया को उनके गरक होने की खबर तक भी नहीं होगी.

"ठीक है. तो यान हमारा कौन चलाएगा?"

"मैं जो रहा" -- केशानी बोला -- "साथी मुझे चाहिए" चाहे तुम, चाहे प्रकाश. प्रकाश बेहतर रहेगा"

"क्या यह उपाय सरल है ?"

"सर्वथा" -- डॉक्टर ने कहा

"मैं समझ गया और कुछ ?" वाकेश ने पूछा

"तो तुम अभी तक मृगनयनी को गायब नहीं कर सके ?" केशानी ने प्रकाश से पूछा.

"वह तो बड़ी अड़ियल है" -- प्रकाश का उत्तर था.

"उसे तो उड़ा ले जाओ. बाकी हम देख लेंगे" -- केशानी ने कहा -- "समय कम है".

प्रकाश चला गया. तब बड़ी देर तक बहस करने के बाद डॉक्टर केशानी और वाकेश कमरे से, अलग-अलग मार्ग से निकल गए.

10. नया अन्तरिक्षयान

मुख्य स्टील गढ़ने वाली कम्पनी ने अन्तरिक्ष की सामग्री तैयार करनी थी. उनके सामान जुटाने में कुछ कमी रह गई. शान्त ने उसके लिए काफी समय खर्च किया.

"अब तो यह विमान काफी मजबूत बन गया है और किसी भी खतरे का मुकाबला कर सकता है. उड़ान के लिए हम तैयार हैं". -- शान्त ने आश्वासन दिया

कर्ण बोला -- "यदि वे लोग हमारा पीछा करके इस यान को नष्ट कर दें तो ?"

"हमें इससे चार गुना शक्तिशाली अन्तरिक्ष-यान एक और तैयार रखना है हम खतरा मोल लें ही क्यों ?

"ठीक है" -- कर्ण ने कहा -- "मेरे पास एक ऐसा कुशल व्यक्ति है जो ऐसे यान को तैयार करने का ठेका सहर्ष ले लेगा".

"पर इतने भारी विमान के लिए धन कहां से आएगा ?"

"धन की चिन्ता मुझ पर छोड़ दो"--कर्ण ने आश्वासन दिया, "धन जितना चाहिए मैं लगाने को तैयार हूं, तुम्हारी देन योजना के रूप में मेरे धन के मूल्य से भी कहीं अधिक महत्व रखती है".

"वाह ! मुझे अब और क्या चाहिए जबकि सेठ साहब मुझे आश्वासन दे रहे हैं चार गुना बड़ा, चार गुना" -- शान्त ने प्रसन्नता व्यक्त की -- "इतने बड़े हवाई जहाज की गति प्रदान करने के लिए तांबे के चार छड़ भी तो चाहिए".

"उनके खरीदने का भी मैं प्रबन्ध कर लूंगा"-- कर्ण ने दोहराया.

इन दोनों का एक मित्र था दुग्गल, जो तकनीकी क्षेत्र में तथा हवाई जहाज बनाने में अत्यन्त निपुण तथा अनुभवी था और विश्व प्रसिद्ध था. अतः उसे दूसरे बड़े अन्तरिक्ष को बनाने का ठेका दे दिया गया. काम पूरे जोर-शोर से शुरु हो गया. अनेक कारीगर दिन-रात उसे बनाने में जुट गए. उधर शान्त और कर्ण भी अपने मौलिक यान को तैयार करने में जुट गए तथा सारा समय उसके लिए सामान जुटाने में लगाने लगे

वास्तव में प्रकाश के कारीगर उसके कारखाने में काम कर रहे थे जिसकी किसी को भी खबर नहीं थी. पता नहीं वे उसमें कैसा माल लगा रहे थे.

काम चलता रहा तथा निर्धारित समय में हवाई जहाज तैयार हो गया. उसके लिए उन्होंने निर्देश-पुस्तिका को भी देखना था. प्रकाश ने रिपोर्ट दी कि यान तैयार है. दुग्गल ने भी उसकी जांच की. कर्ण और शान्त भी हेलीकाप्टर में निरीक्षण करने गए

कुछ रातों के बाद एक भारी यान कर्ण की हवाई पट्टी पर उतरा. वह धीरे-धीरे हिला और इस भारी भरकम यान ने धरती पर गड्ढे कर दिए. शान्त और कर्ण चौंक पड़े.

द्युति पिता के संग प्रतीक्षा कर रही थी. शान्त ने उसे देखा और नमस्ते की.

"यान तो खूब उड़ता है ! क्या कमाल है" -- शान्त ने प्रसन्नता व्यक्त की -- "हम तो चन्द्रमा का भी चक्कर काट आए है".

"क्या ?" द्युति को धक्का सा लगा -- "बिना मुझे बताए ही? इसमें यात्रा करके मेरे तो प्राण ही निकल गए होते".

"तभी तो हमने बताया नहीं. अगली बार जब हम उड़ेंगे तो तुम्हें परेशानी नहीं होगी".

वे दोनों वैज्ञानिक अत्यन्त प्रसन्न थे. उनके जीवन की एक बड़ी साधना पूर्ण होने जा रही थी जिसके लिए उन्होंने बहुत समय तक अपना खून पसीना एक कर दिया था.

उनकी आश्चर्यपूर्ण मुद्रा को भग करते हुए श्रीराम ने प्रवेश किया.

"महा महिम" वह झुक्कर बोला -- "मैं इस अन्तरिक्षयान को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूं. आपसे अनुरोध है कि मुझे भी सेवा का अवसर दें तथा खाने के लिए मेज पर बैठने का कष्ट करें".

"अभी जरा मशीन को भी देख लें" -- इंजीनियरों ने आगन्तुकों को निमन्त्रित किया.

द्युति ने हवाई जहाज तो देख रखे थे और इस अन्तरिक्ष-यान की रूपरेखा का भी उसे भीली भाति ज्ञान था तो भी इस यान को देखकर दांतों तले उगलियां दवाने लगी. इसके भीतर का ढाँचा सचमुच ही एक अनोखी कला का नमूना था.

इसका ढाँचा चालीस फुट घना पक्के स्टील का बना हुआ था. भीतर से इसका पूरा अनुमान लगाना कठिन था, क्योंकि इसकी कितनी ही परतें थीं तथा खाने थे. मध्य में शहतीरियां लगी हुई थीं. इसमें बेरिंग लगे हुए थे जिनसे कि इसके ढाँचे को किसी दिशा में भी घुमाया जा सकता था. अन्दर का घेरा तांबे के सिलेंडरों का बना हुआ था.

बीच-बीच में स्तूप लगे हुए थे और इसमें कई एक सीटों का प्रबन्ध था यन्त्रों के लिए बोर्ड थे जहा कई वल्व व बिजली की तारें लगी हुई थीं. शीशे, प्लास्टिक तथा अन्य धातुओं का इसमें सम्मिश्रण था.

बाप व बेटी ने उत्सुकता वश कई प्रश्न पूछे और उनहोंने उस जहाज के विषय में सभी उल्लेखनीय बातें उन दोनों को समझा दीं. कर्ण बड़ी शान्ति से उन्हें सभी कुछ दिखलाता गया.

शान्त ने उनका ध्यान खम्भों की ओर दिलाया जो सीधे व आड़े खड़े थे. उसने बताया कि उसका निर्माण इस ढंग से हुआ है कि ऊपर की ओर उसकी गति बनने में कोई असुविधा न हो.

उसमें बारुद भी था, वायु शोधक यन्त्र भी थे और प्राणप्रद वायु शुद्ध मिलती थी जल प्रदाय विभाग में थोड़ी सी कमी थी. वैसे तो गदे जल को साफ करने की उसमें व्यवस्था थी.

"जल तो तुम प्रचुर मात्रा में साथ ले ही जाओगे. इसकी समस्या तो विशेष नहीं"

"हमने कुछ कमियां देखी हैं और उन्हें दूर कर दिया गया.

तनी भारी मशीन पर हमें पूरा संतोष है. हमने इसे खूब परख लिया है" -- शान्त ने बताया.

"अपने नए अन्तरिक्ष-यान के साथ तो तुम तैयार हो. तुम्हें पुरानी खूसट मशीनों की क्या परवाह है ?"

"बिल्कुल तैयार" -- शान्त ने कहा "लोक लोकान्तरों की यात्रा के लिए हमें केवल चार-पांच दिन और चाहिएं और फिर प्रभु के सहारे".

11. द्रुति व मृगनयनी का अपहरण

दोपहर के बाद अपने अन्तरिक्ष-यान को उन्होंने कर्ण की हवाई पट्टी पर खड़ा कर दिया. तब शान्त और द्रुति घुड़सवारी के लिए पार्क में चले गए, जहां से वे शीघ्र ही लौट आए. शान्त अपने मोटर साईकल पर सवार हो गया. द्रुति अपने द्वार के पास पार्क में पेड़ के नीचे टेनिस का खेल देखने के लिए बैठ गई.

उसके बैठते ही तांबे की प्लेट का एक गोला ठीक उसके सामने उतरा. एक भारी स्टील का द्वार खुला और एक बलवान व्यक्ति चमड़े की पोशाक पहने हुए बाहर कूदा. उसने चेहरे को ढका हुआ था.

द्रुति चौंकी. शान्त तो अभी गया था. यह छोटा-सा यान भी उसका नहीं हो सकता. यह तो द्रुति के छोटे से निजी हवाई जहाज जैसा था जो उड़ नहीं सकता था. वह चिल्लाई, परन्तु वह अपरिचित व्यक्ति उसे बरबस उठा कर चल पड़ा.

वह था डॉ. केशानी जो उसे हवाई जहाज की ओर ले गया. द्रुति बेचारी बहुतेरा हाथ-पैर पटकती रही परन्तु उसका वश न

ओर सकेत कर रही है. चले उसे काबू करें"

"अभी नहीं. कितनी दूर है वे ?" कर्ण ने पूछा.

शान्त ने स्टड को छुआ और सुई चलती-चलती रुक गई तब कर्ण ने कम्प्यूटर पर चावियों को पंच किया.

"वे तो सौर मंडल का आधा घेरा तय कर चुके है".

"नहीं इतनी दूर वे नहीं जा सकते" -- कर्ण ने टोका -- "पर उनके पास पता नहीं कितनी भारी तांबे की छड़ है. उन्हें पकडने में बहुत समय लगेगा. चलो, तो हम भी चले".

वे अपने दूसरे भारी अन्तरिक्ष-यान की ओर गए और उसका अच्छी तरह से निरीक्षण किया.

शान्त जब चलने को हुआ तो कर्ण ने रोक दिया. "शान्त" -- वह बोला -- "हमारे पास तांबे के केवल चार छड़ हैं. दो जाने में लगेंगे, दो लौटते समय और वहां न-जाने कितना समय लग जाए. अत. हमें तांबे के अधिक डडे चाहिएं".

शान्त यद्यपि बहुत उतावला था, परन्तु भली-भाँति समझता था कि यहीं से ही पूरा प्रबन्ध करके चलना चाहिए और उन्हें और चार डडों की जरूरत पड़ेगी "चार छड़ और ले लें"-- वह बोला.

"पानी की व्यवस्था तो है ही ?"

"हा" -- शान्त ने पुष्टि की. और तांबे के लिए ढलाई के कारखाने में पूछताछ करने गया. वहां भी मतलब भर का नहीं था. कम्पनी वाले गाड़ियों में लगे तांबे को ढालने को तैयार नहीं थे.

एक घटे के बाद शान्त ने कर्ण को फोन किया -- "स्टील कम्पनी वालों ने तांबे का अखीरा छिपा रखा है. वाकेश से भी पता करता हू".

"नहीं" -- कर्ण ने कहा "वहां तो और भी देरी हो जाएगी".

"तब ?"

"हम विष्णु के पास चलते है, बात बन जाएगी. हमारा यान तो तैयार है" -- कर्ण ने आश्वासन दिया.

वे अपनी स्टील कम्पनी में गए -- "हमारे पास तांबा थोड़ा सा भले ही हो" -- विष्णु ने बताया.

शान्त यह सुनकर गर्म हो गया, पर कर्ण ने उसे ठंड़ा कर दिया. फिर कर्ण ने विष्णु को घटना बताई.

"यह बात है तब तो मैं पाताल से भी तांबा ढूँढ निकालूगा". -- विष्णु ने धीरज बँधाते हुए कहा -- "चाहे हमें अपनी मशीनों को भट्टी में ढालना क्यों न पड़े".

दो दिन से पहले ही तांबे के चमकते हुए सिलेंडर तैयार हो गए. इसी बीच कर्ण ने जो-जो भी आवश्यक सामग्री चाहिए थी तैयार कर ली.

शान्त का हृदय तेजी से बज रहा था. उसकी कम्पास पर तो वह यान ऊपर को बढ़ता ही जा रहा था उसका खून खौलने लगा, पर तभी सुई रुकी -- "कई प्रकाश वर्ष वे आगे बढ़ चुके हैं" -- उसने आह भरी -- "बस मैं तो बरबाद हो गया अगर द्युति नहीं मिली".

"अरे, मैं भी तो तुम्हारे साथ जा रहा हूँ" -- तुम क्यों परेशान होते हो ? एक वर्ष हो अथवा अनेक प्रकाश वर्ष हमारे पास ब्राह्माण्ड भर में भ्रमण करने के लिए सामग्री है".

"अब मैं द्युति के पिता वकील साहब को इतना भर बता आऊं कि काफी समय लग सकता है" -- शान्त बोला तथा उसे सूचित भी कर दिया.

तब उड़ान की तैयारी करने लगे. उन्होंने लॉक बंद कर दिए तथा चल पड़े. शान्त ने मशीन को संभाला. कर्ण ने उसे जरा धीरे-धीरे चलाने को कहा, क्योंकि गर्मी झुलसाने वाली थी.

वे वातावरण से ऊपर निकल गए. शान्त से मशीन संभलनी कठिन हो गई. वे भारहीन अवस्था में पहुँच गए. शान्त ने उत्तोलक को धकेला और वह धड़ाम से सीट पर जा गिरा. वार्तालाप भी अब फोन द्वारा सम्भव था.

"अब कुछ खाना-पीना हो जाए" -- शान्त ने कहा.

उन दोनों ने खाना खाया. अब वे लोग ठीक मार्ग पर उड़ रहे थे.

12. प्रकाश की हत्या

अड़तालीस घंटे तक तो केशानी का अन्तरिक्ष-यान खाली स्थानों को चीरता हुआ वेग से उड़ता गया. तांबे की मात्रा थोड़ी रह जाने पर उसकी गति धीमी पड़ गई. उनकी सीटें तथा फर्श अपने-अपने स्थान पर जा टिके. धातु की अन्तिम कण समाप्त होने पर यान की गति एक सी हो गई. अन्दर तो पता नहीं लग रहा था, परन्तु अन्तरिक्ष यान प्रकाश की गति से भी हजारों गुना अधिक तेज उड़ रहा था.

डॉ. केशानी ने जब उठने का प्रयास किया तो कमरे में लटकता रह गया. वे तीनों उसे देखकर अचम्भे में पड़ गए. डॉक्टर ने थोड़ी देर में जरा सम्भलकर देखा कि उसकी हड्डी-पसली ठीक थी तथा उसके साथी अभी वैसे ही पड़े थे.

वे लोग भी सहारा लेकर बैठ गए. युवतियां तो आराम करने लगीं प्रकाश चमड़े का वेप उतारने लगा.

"नमस्कार, डॉ. केशानी. तुम्हारे मित्र को जब मैंने ठोकर मारी तो कोई घटना हुई होगी ?"

शक्ति के अतिरिक्त सरिए पड़े हैं तुरन्त काम चलाने के लिए. तब तक अपने नक्षत्रों से दिशा का पता लगने लग जाएगा और हम अपने सौर मंडल में पहुँच जाएंगे. अब जरा पेट पूजा कर लें".

"तुमने खूब सोची" -- द्युति बोल उठी -- "मेरे पेट में तो चूहे नाच रहे हैं, मैं प्रवीण बावर्ची हूं साथ दूसरी सहेली, भी रसोई दिखा दो".

"वह रही उधर द्युति. मैं तुम्हारे धैर्य की दाद देता हूं".

द्युति ने मृगनयनी को हिलाया और दोनों रसोई की ओर गईं. जाते समय उसे केशानी के शान्त तथा ठंडे स्वभाव का ध्यान आया उसके दृढ़ स्वभाव से ही द्युति को प्रेरणा मिली थी.

प्रकाश के सूट पर से गुजरते समय जब वह रेंग कर गई तो मौका देखकर उसने उसकी जेब से पिस्तौल निकाल कर अपनी जेब में संभाल ली.

तब उसने सहेली पर दृष्टि डाली और रसोई से होकर लौट आई.

"यह तो गले के अन्दर डाल लो" -- द्युति ने आदेश दिया.

वह गोली थी जो मृगनयनी ने खा ली. उसे खाते ही उसमें प्राण आ गए.

"अब उठो, पहले से बेहतर हो" -- द्युति ने तेजी से कहा -- "हम मरीं नहीं, न ही मरेंगी".

"मैं तो मरूंगी" -- शुष्क उत्तर मिला -- "तुम भेड़िए प्रकाश को नहीं जानती ?"

"मैं उसे खूब जानती हूं जितना और कोई नहीं जानता. दो अत्यन्त फुर्तीले व्यक्ति हमारे पीछे आ रहे हैं और शीघ्र ही देखना क्या रंग खिलता है" -- द्युति ने दृढ़ता से कहा.

- "क्या ?" वह हैरान सी बोली "ठीक कह रही हो ?" गोली

तथा द्युति के शब्द उसमें नए प्राण फूँक रहे थे.

"बिल्कुल, अभी हमने बहुत कुछ करना है. हम भारहीन दशा में हैं तुम घबरा क्यों रही हो ?"

"भारहीन होने से मुझे तो परेशानी हो रही है".

"पर मैं तो अभ्यस्त हो चुकी हूँ" -- द्युति ने कहा -- "और फिर मैंने तो नक्षत्रों व अन्तरिक्ष यात्रा के सिद्धान्तों को पढ़ा है. तुम परेशानी भूल जाओ. गिरे गिराएंगे हम कदापि नहीं. आओ पहले हम स्नान करेंगे".

"स्पंज से मैं बताऊंगी और फिर वस्त्र तो हमारे पास बहुत हैं तुम्हें मेरे वस्त्र खूब जचेंगे" -- द्युति ने बताया.

दोनों ने स्नान करके वस्त्र पहने तथा अपने में सुन्दर लगने लगीं.

"अब बढ़िया है" -- द्युति ने उसे देखते हुए कहा.

मृगनयनी लगभग बाईस वर्ष की युवती थी भारी काले बाल, मृग की भांति आँखें तथा साफ रंग. वह एक सुन्दर लड़की थी. द्युति ने सोचा यद्यपि इस समय वह टूटी-फूटी व क्लांत सी नजर आ रही थी.

"पहले एक-दूसरे को अपना परिचय देते हैं" उस लड़की ने सुझाव रखा "मैं हू स्टील कम्पनी के बाकेश की निजी सचिव. मेरे पिता प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे जिन्हें इन लोगों ने हिस्सेदार बनाकर धोखे से मरवा दिया. मैं कुछ धन की उम्मीद में इनके पास लग गई, परन्तु ये मुझे पकड़ लाए हैं. अब बातें करना व्यर्थ होगा. प्रकाश तो मुझे मार डालेगा मुझे विश्वास है. हां, यदि जैसा तुम कहती हो वे लोग पीछा कर रहे हैं तो बचने की सूरत हो सकती है".

"परन्तु डॉ. केशानी तुम्हें मरने देगा ?"

"केशानी तो उससे भी अधिक हृदयहीन राक्षस और क्रूर है".

"नहीं, तुमने देखा नहीं जब प्रकाश मुझे मारने को हुआ था" -- द्युति ने कहा.

"वह इसलिए कि वह तुम्हें जिन्दा देखना चाहता है" -- मृगनयनी का उत्तर था

"मैं नहीं मान सकती" एक बिजली सी द्युति के दिल में कौंध गई -- "उसने हमारा विशेष ध्यान रखा है. मुझे विश्वास है कि हम ठीक रहेंगे तथा सुरक्षित वापिस लौट जाएंगे".

"तुम विश्वास से ऐसा कह रही हो ?" मृगनयनी ने पूछा.

"मैं हू शान्त की मगेतर जिसने इस अन्तरिक्ष-यान का आविष्कार किया है और वह इस यान का पीछा बराबर कर रहा है"

मृगनयनी बोली -- "मुझे इनकी गुप्त बातों से मालूम हुआ है कि दूसरा यान नष्ट कर दिया गया है और यदि वह बचा भी है तो कहीं भी पहुचने से पूर्व ही टूट-फूट जाएगा"

"वे लोग तो यही कहेंगे" -- द्युति ने घृणा व्यक्त की -- "तुमने शान्त और कर्ण का नाम सुना है ? वे हिस्सेदार हैं ?"

"हां, शान्त के साथ कर्ण का नाम भी सुना है ?" -- मृगनयनी बोली.

"कर्ण तो देश का विख्यात आविष्कारक है और उतना ही फुर्तीला शान्त भी है. उन दोनों ने तो इससे चार गुना बड़ा तथा हर प्रकार से सुसज्जित दूसरा अन्तरिक्ष-यान भी तैयार कर लिया है. वह इससे कहीं अधिक मजबूत और तेज है.

"तुम्हारे शब्दों से मुझमें नया जीवन लौट रहा है" -- मृगनयनी पहली बार जोश से बोली -- "ठीक है अब चाहे कितनी

कठिन यात्रा भी होगी मैं उसे मनोरंजन ही समझूंगी हां, यदि मेरे पास बन्दूक होती...!"

"यह रही" मृगनयनी ने द्युति के पास देखी -- "एक और भी है. ये दोनों ही प्रकाश के सूट से मैंने निकाली हैं" -- द्युति ने कहा.

"जीओ प्रिये" -- मृगनयनी चमक उठी -- "आखिर युवतियों में भी दम है. अच्छा, अब देखना अगली बार यदि प्रकाश ने चाकू से मेरे गले पर प्रहार किया तो... अब आओ पराठे तैयार करें अब तो हम पक्की सहेलिया बन गई है न".

वे दोनों रसोई में खाना तैयार करने लगीं मृगनयनी तो नवसिख थी. उसने भोजन बनाना शुरु किया तो आटा कहीं बह गया, सब्जी कहीं उड़ने लगी तथा चाय की बूंदे किसी और तरफ तैरने लगी. मृगनयनी उन्हें काबू करती ही रह गई हारकर वह एक ओर हट गई.

"प्रिये ! क्या करें ? सभी कुछ बेकाबू हो रहा है ?"

"क्या बताऊ, यदि हमारे पास पक्षियों का पिंजरा होता तो सब कुछ पकड़ने का प्रयत्न करते अब हम सब कुछ बांध कर भी रखते हैं मैं तो प्यासी मर रही हूं. बोतल खोलते भी मुझे डर लगता है" उसके पास शिकंजी की बोतल थी -- "इसे खोला तो बूंदे उड़कर नाक-मुंह में घुस जाएगी तथा हमारा दम भी घुट सकता है".

वही बात हुई. बूंदे लगीं उड़ने और लगी द्युति भागने. चीखें मारती हुई और आँख मलती हुई.

केशानी देख-देख कर हँस रहा था -- "मैं तो तुम्हें इन खिलौनों से खेलने की सिफारिश नहीं करूंगा जब तक कि तुम भारहीनता की अवस्था में हो रुको जरा मैं जाली लाता हूं".

वह जाली ले आया हवा को उससे साफ करता हुआ बोला,

"बिखरी हुई सामग्री घातक सिद्ध हो सकती है जब तक कि मुखौटा न पहनो. पेय पदार्थ तो तुम एक नली से ले सकती हो यदि तुम्हें उससे पीना आता है. सावधानी से तुम्हें निगलना होगा. अभी आकर्षण साधारण स्थिति में आ जाएगा. मैं स्थिति को संभालता हूँ".

"कमाल हो गया ! कितना आराम मिला है !" मृगनयनी चिल्लाई जबकि हर चीज ठिकाने से खड़ी होने लगी -- "मैंने तो सोचा ही नहीं था कि हम फिर स्थिर स्थिति में खड़े हो सकेंगे".

खाना तैयार करना अब साधरण बात थी. जब वे चारों खाने को बैठे तो द्युति ने देखा डॉक्टर की बांई बाँह लगभग निष्क्रिय हो चुकी थी तथा वह बड़ी कठिनाई से खाना खा पा रहा था. उसके चेहरे में भी बहुत चोटें लगी हुई थीं. भोजन के उपरान्त वह दवाई के डिब्बे की ओर गई.

"आइए डॉक्टर, प्राथमिक चिकित्सा के लिए"

"अब डॉक्टर अपनी चिकित्सा रोगियों से करवाएगा ?" उसने चुटकी ली और उसकी ओर बढ़ गया.

"तुम्हारी बाजू तो लगड़ी हो रही है, घाव कहां है ?"

"मेरे कंधे की ओर भी दुर्दशा है. यह तो बोर्ड से टकरा गया था न".

"कमीज उतार कर यहां लेट जाओ. मैं तुम्हारी डॉक्टरी करती हूँ".

उसके घाव देखकर वह अवाक् रह गई. और उसे खूब मला.

"मृगनयनी, तौलिया और गर्म जल दोगी". उसने कुछ क्षणों तक घावों को साफ किया, मरहम लगाई तथा पट्टी बाधी.

वह चुपचाप लेटा रहा. मालिश से उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया और उसे पसीना छूटने लगा. वह एकदम रुकी.

"अरी डॉक्टरों की डॉक्टर, जारी रखो" -- उसने धीरे से निर्देश दिया "पहले तो लगा था जैसे तुम मुझे कत्ल कर दोगी, परन्तु अब तो जादू का सा असर हो रहा है".

मालिश के बाद वह कमीज पहनकर बोला -- "बहुत-बहुत धन्यवाद. मुझे शत प्रतिशत आराम है, पर यह बताओ कि अपने शत्रु की चिकित्सा तुमने किस उद्देश्य से की है ? तुमने मेरी खोपड़ी क्यों नहीं फोड़ दी ?"

"डॉक्टर, मैं भी तो अपनी डॉक्टरी का प्रदर्शन करना चाहती थी" -- वह मुस्कराई -- "तथा अपने इंजीनियर डॉक्टर को रुग्ण नहीं देखना चाहती थी".

"क्या कमाल का तर्क है !"

वह बिना उत्तर दिए प्रकाश की ओर मुड़ी.

"कहिए प्रकाश, आप कैसे हैं ?"

"दूर हट जाओ सामने से अन्यथा तुम्हारा हृदय चीर दूगा".

"बकवास बंद" -- केशानी गरजा.

"मैंने क्या किया है ?"

"आदमियों की तरह यदि बोलना नहीं आता तो चुप रहो. और यदि तुमने दुति के विषय में कुछ करने की कोशिश की अथवा कुछ कहा तो देखना मेरी अन्तिम चेतावनी है".

"और मृगनयनी के विषय में ?"

"वह तुम्हारी जुम्मेदारी है मेरी नहीं"

प्रकाश के नेत्रों में शरारत की झलक थी. वह छुरे को चमड़े पर तेज करने लगा और अपने शिकार को घूर-घूर कर देखने लगा.

दुति विरोध करने लगी तब मृगनयनी ने उसे चुप करा दिया और पिस्तौल निकाल कर दिखाई.

"चाकू की चिन्ता मत करो" -- वह बोली -- "यह तो मुझे काफी दिनों से दिख रहा है. इससे क्या ? प्रकाश, चाकू फैंक दो और मेरी ओर लुढका दो. मेरे तीन गिनने से पूर्व-- एक" -- प्रकाश की छाती पर पिस्तौल थी तथा घोड़ी पर उंगलियां.

"दो " प्रकाश ने चाकू फेंक दिया मृगनयनी ने उसे उठा लिया.

"डॉक्टर" -- प्रकाश ने सहायता की अपील करते हुए कहा -- "तुम इसे गोली क्यों नहीं मारते ? मुझे कत्ल करवाओगे ?"

"मुझे तुम्हारे से क्या प्रयोजन ? कत्ल करो अथवा स्वयं कत्ल हो जाओ. यह तुम्हारी अपनी ही करतूत है जो तुमने पिस्तौल खुली छोड रखी थी मैं जानता हू द्युति ने कब इसे सरका लिया."

"मुझे क्यों नहीं बताया ?"

"क्यों, जब तुम्हें ही अपनी चिन्ता नहीं" ?

"तो तुम मुझे शान्त और कर्ण के बारे में क्यों कहने आए ?"

"क्योंकि तुम्हारे उपाय कारगर हो सकते थे मेरे नहीं तुम उपाय सोचने में तो अचूक हो कार्यवाही करने में इतने नहीं".

"उसका क्या करोगे ? क्या भाषण ही झाड़ते रहोगे ?"

"तुम खुद ही जूझते रहो. मैं कुछ नही करूगा" -- डॉक्टर का उत्तर था

तब द्युति ने उनकी शान्ति को भग किया

"डॉक्टर, तुमने मुझे बदूक लेते देखा था ?"

"बिल्कुल"

"तुमने मेरे से छीनी क्यों नहीं ?"

"छीन सकता था यदि चाहता तो और अब भी छीन सकता हू" -- डॉक्टर ने ऐसे घूर कर देखा कि द्युति का हृदय काप उठा.

द्रुति ने कहा -- "प्रकाश के पास यदि और पिस्तौल है तो उसे भी छीन लो".

"नहीं, उन्हें स्वय जूझने दो. अब तुम्हें मेरा आदेश है कि यदि वह गड़बड़ करने का साहस करे तो गोली मार दो अन्यथा कोई रास्ता नहीं".

द्रुति अनमनी सी चुप खड़ी रही.

तब केशानी ने कहा -- "मेरा तो अनुमान है कि उस लड़की को किसी की मदद की जरूरत नही".

मृगनयनी तब प्रकाश की तलाशी लेकर लौटी और उससे बोली -- "बात खत्म करो. तुम ढँग से व्यवहार करोगे कि तुम्हारी गर्दन को पिस्तौल से बाधू ?"

"अब डाक्टर ही पीछे हट गया" -- वह गुर्राया -- "पर मुझे वापिस लौटने दो. वहां तुम्हें देखूगा -- चाण्डालिन" !

"बस-बस" मृगनयनी चमकी -- "ध्यान दो यदि तुमने मुझे अब गाली दी तो हर गाली की एक गोली चखने के लिए तैयार रहना... अब बोलो".

डॉक्टर ने शान्ति भग की जो कि मृगनयनी की धमकी के बाद छा गई थी.

"हां भाई ! सघर्ष समाप्त. भोजन और विश्राम भी हो चुका है. अब मैं यान को गति देता हू. सभी लोग अपने-अपने स्थान पर...."

साठ घंटों तक डॉक्टर अन्तरिक्ष-यान को अन्तरिक्ष में खींच ले गया. बीच-बीच में व्यायाम करते समय अथवा खाने के समय ही उसने गति को धीमा किया. अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए डॉक्टर यथा समय आसन भी करता रहा. मयूर आसन, भुजंग आसन तथा शीर्ष आसन इत्यादि से उसके शरीर में रक्त का

सवार बराबर बना रहा तथा आलस्य भी पास न फटका.

दोनों युवतियों में गहरी मित्रता हो गई. प्रकाश मन में उद्विग्न था. डॉक्टर तो व्यायाम तथा भोजन के अतिरिक्त सारा समय काम में जुटा रहता था. वह सदैव प्रसन्न तथा शान्त रहता था, परन्तु अनुशासन का पक्का था.

तावें की छड़ें समाप्त होने को आईं तो डॉक्टर ने कहा -- "अब हमें आगे यात्रा नहीं करनी है. यान अब स्थिर रहेगा और हम वापिस लौट चलेंगे".

तब उसने यान को सभाले रखा, परन्तु अभी भी वह धरती के समानान्तर उड़ रहा था. उसने यान की दिशा घुमाने की कोशिश की और कम्प्यूटर पर जुट गया.

"कुछ परेशानी है, डॉक्टर ?" द्युति ने पूछा.

"नहीं, जब यान किसी भी नक्षत्र के पास से गुजरता है तो नक्षत्र की आकर्षण शक्ति के कारण उसमें कुछ झुकाव का होना स्वाभाविक है, परन्तु अब तो कोई बड़ा ही नक्षत्र है जिससे हम खिंचे जा रहे हैं".

"फिर !"

"यदि यही हालत रही तो हम अपने सौर मंडल से दूर कहीं और भटक जाएंगे तथा धरती पर कभी भी नहीं पहुँच पाएंगे".

डॉक्टर ने विशेष शीशों वाली अपनी ऐनक लगाई और दूर तक देखते हुए बोला -- "अरे यह तो एक भयानक विशाल ग्रह है. हमतो इसके चक्कर ही काटते रहेंगे. इससे मुक्त होने के लिए यान को विशेष शक्ति देनी पड़ेगी जिससे इसकी दिशा परिवर्तन न हो सके".

उसने बहुत प्रयत्न किया परन्तु बात न बनी. वे सभी लोग घबरा गए और एक साथ चिल्लाने लगे -- "बस अब खेल

खत्म". दोनों प्रभु में आस्था रखने वाली युवतियों ने सच्चे मन से प्रार्थना की.

"अभी निराश मत होओ" -- डॉक्टर की आवाज़ अभी भी दृढ़ और शान्त थी. "दो-तीन दिन ग्रह के प्रभाव से मुक्त होने में लग सकते है. शेष बचे तांबे से तो केवल एक ही और विस्फोट हो सकता है. मैं कम्प्यूटर से ठीक कोण बनाने का यत्न करूगा".

वह इंजन पर डटा रहा तथा एक घंटे तक कम्प्यूटर पर काम करने के बाद इंजन के कोण को थोड़ा दूसरी दिशा देने में सफल हो गया.

"अब हमें तांबे की जरूरत है चाहे थोड़ा बहुत ही मिल जाए. चांदी, पैसे, धेले निकल इत्यादि जो भी मिल जाए हमारे लिए अत्यन्त मूल्यवान है".

उन लोगों ने थोड़े से सिक्के तथा धातुओं के टुकड़े इकट्ठे किए. डॉक्टर ने अपनी घड़ी, अंगूठी, ताले, चाबियां जो कुछ भी था उसने बटोर लिया, पिस्तौल की गोलियों के सिक्के भी. लड़कियों ने भी धातुओं की जो-जो चीजें थीं दे दी और द्युति ने तो अपनी सगाई की अंगूठी भी दे दी.

"मैं इस अंगूठी को तो संभाल कर रखती परन्तु" -- उसने उसे अन्य वस्तुओं में डालते हुए आह भरी.

"अब तो जो कुछ हमारे पास है अपने प्राणों के लिए झोंक देना चाहिए. मैं नही समझता शान्त ने सगाई की अगूठी में असली सोना ही डाला होगा. इसमें अवश्य मिलावट होगी, परन्तु हमें तो एक ग्राम तांबा भी काम देगा".

उसने सारे सिक्के उत्तोलक में झोंक दिए और उसे गति दी. यह सब कुछ उसमें शीघ्र ही घुलकर समाप्त हो गया और वह बराबर देखता रहा. सभी लोग सन्देह की स्थिति में पड़े प्रतीक्षा

करते रहे. तभी डॉक्टर ने कटु शब्दों में घोषणा की -- "इतने से काम नहीं चलेगा"

प्रकाश पागल-सा हो गया और वह केशानी पर झपट पड़ा जिसने उसके सिर पर बन्दूक का कुंदा मारा. प्रकाश की खोपड़ी ठनक उठी और वह यान की दूसरी ओर चित्त जा गिरा. दोनों लड़कियां एक-दूसरी की ओर हैरान होकर देखती रहीं. डॉक्टर बिल्कुल शान्त था.

"अब आगे ?" द्युति ने पूछा

"तुम्हें क्या चिन्ता है ?"

"शान्त और कर्ण शीघ्र ही हमें ढूढ लेंगे, शायद दो ही दिन में"

"इस जीवन में तो नहीं. उन्होंने पीछा किया तो मरे".

"यही तो तुम्हारी भूल है" -- वह चमकी -- "उनको तुम्हारे यान की हर गति विधि की खबर है. उन्होंने दूसरा अन्तरिक्षयान इससे कई गुना बड़ा बना लिया है जिसका तुम्हें पता ही नहीं और वे इस नई धातु के विषय में इतना जानते हैं जितना किसी ने सुना भी नहीं, क्योंकि उनकी योजना में इसका वर्णन नहीं था जो तुमने चुराई".

"केशानी ने उसकी बड़बड़ाहट को सुनकर कहा --. "क्या वे बिना देखे ही हमारा पीछा कर लेंगे ?"

"मेरा तो ऐसा ही विचार है".

"कैसे ?"

"मैं नहीं जानती और जानती होती तब भी नहीं बताती".

"ऐसा नहीं होगा यदि वे हमें पा भी लेंगे तो भी ग्रह के कारण . ऐसा सम्भव नहीं. वे भटक जाएंगे".

"तुम तो उन्हें मारने जा रहे थे. क्या हमारे साथ उन्हें नहीं पकड़ोगे ?"

"वे हमारे रास्ते में रोड़ा बने बैठे थे इस नई धातु को ढूँढने में. यह आज तक की सबसे बड़ी खोज है".

"वह तो हमारे पीछे आ रहा है यदि वह आ जाएगा तो हमें यहां से छुड़वा लेगा"

वह धीरे-धीरे अपने से ही बोलती रही -- "वह तो हमारा पीछा कर रहा है. वह रुकेगा थोड़ी चाहे उसे फंस जाना पड़े".

"मृगनयनी तो शायद बेहोश पड़ी है" -- द्युति ऊंचे स्वर में बोली.

सबके प्राण खुश्क होते जा रहे थे. द्युति ईश्वर से प्राण रक्षा के लिए आराधना कर रही थी. अन्तरिक्ष-यान उस भयानक, ठंडे और वीरान ग्रह की ओर बढ़ रहा था.

13. डॉ. केशानी स्वयं क़ैद में

शान्त और कर्ण अपने बड़े अन्तरिक्ष-यान को पूरी गति से उसी दिशा में ले जा रहे थे जिधर उनकी कम्पास निर्देश कर रही थी. वे बारी-बारी बारह-बारह घंटे बैठते रहे.

वे इस साहसिक यात्रा पर बड़े ठाठ से गए और जल्दी होने के बावजूद भी उन दोनों पायलटों की यात्रा सफल थी.

"यदि वह मूर्ख यह सोचता है कि बचकर भाग निकल जाएगा तो उसे भ्रम है" -- शान्त ने कहा-- "हम उसे छोड़ने के कहां हैं ? हमें अब दिशा बदलनी चाहिए".

कर्ण ने कहा -- "अभी उनके विषय में ऐसा कहना ठीक नहीं.

वह यान अनुमानतः वापिस लौट रहा है. पर अनुमान तो अनुमान ही है हमें अपने अन्तरिक्ष यान को उतनी ही गति देनी चाहिए जितनी दोनों यानों के परस्पर मिल सकने के लिए उचित हो".

छड़ की दिशा उलट दी गई. अन्तरिक्ष-यान लट्टू की भांति घूमा ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वे नीचे को उड़ रहे हों, परन्तु वे ऊपर ही जा रहे थे.

"कर्ण सुनो"

"कहो"

"हम कहा जा रहे हैं ? यान तो खिंचा जा रहा है" -- शान्त भयभीत हुआ

कर्ण के कम्प्यूटर ने बताया कि उनका यान किसी विशेष वस्तु से आकर्षित हो रहा है.

"विशेष शीशे को लगाकर देखते हैं. उनसे कितनी दूर रह गए हैं ?"

"लगभग दस घंटे की और यात्रा है" -- शान्त ने कहा -- "चिन्ता मत करो"

"दोनों हम लग रहे हैं जरा इसे और गति दो" -- कर्ण ने सुझाव दिया.

यान पूरी गति से ग्रह की ओर बढ़ रहा था. उसके समीप आने पर गति धीमी करनी पड़ी. वे दोनों नीचे आ गए और रात की ऐनक लगा कर देखने लगे.

"अरे ! इस ग्रह का इतना भारी आकर्षण" शान्त हैरान रह गया.

कुछ क्षणों में ही धीमी गति पर उडते हुए उन्हें दूसरा यान भी नजर आया. उन्होंने सामने पड़ने वाले ग्रह से बचने की व्यवस्था की. उन्होंने रॉकेट छोडे और उनका यान ग्रह से हट गया.

उधर डॉक्टर केशानी अपनी सीट से हटा और उसने हवाई पोशाक पहन ली.

"मैं अव तावे की खोज में जा रहा हूं. देखें कहां तक सफलता मिलती है"-- उसने कहा.

थोड़ी ही देर में एक मशीन गन का धमाका सुनाई पड़ा और कुछ संकेत मिलने शुरू हुए.

"यह तो शान्त है" -- द्युति चिल्लाई -- "उसने आखिर हमें पा ही लिया. मैने कहा था न तुम्हें ! सव, शान्त और कर्ण का कौन मुकावला कर सकता है ?"

दोनों युवतियों ने एक-दूसरे के गले में वाहें डाल लीं और अजव शान्ति महसूस की.

डॉक्टर ने विजली के तेज प्रकाश में ध्यान लगाया -- "यह तो प्रकाश था गोलियां नहीं".

"सव ठीक है ? सन्देश मिला"

"हां, विल्कुल ठीक" -- केशानी का उत्तर था.

उसने दोनों लड़कियों को सूचना दे दी. तीनों ने हवाई पोशाक पहन ली और ऊपर वाले कमरे में पहुँच गए. तव एक बड़ा धमाका हुआ जव कि दोनों अन्तरिक्ष-यान एक-दूसरे के पास आ गए और परस्पर जुड़ गए.

डॉक्टर केशानी ने समीप वाली लड़की को आगे धकेला जहां शान्त था. शान्त ने उसे पकड़ लिया और सूट के साथ दवा लिया. दोनों प्रेमी मिल गए.

शान्त को वड़ा अचम्भा हुआ जव उसने अपरिचित लड़की की चीख सुनी.

"दवाइए मत, मैं मृगनयनी हूं द्युति नहीं. यह प्रेमी का मिलन नहीं था तो भी उसमें विशेष उत्सुकता जरूर थी".

केशानी भी गोला लगाकर बड़े यान में दाखिल हो गया. शान्त और द्युति ने भी परस्पर आलिंगन किया.

अबके असली प्रेमियों क. मिलन था

"हमें अब शीघ्र उचित कार्यवाही करनी चाहिए" -- डॉक्टर केशानी की आवाज थी -- "हर क्षण का महत्व है".

"पहले सुन लो शान्त" -- कर्ण बोला -- "इस हत्यारे केशानी का क्या करना है ?"

"उसे अपने टब में घुसेड दो और जाने दो उसे भाड़ में" -- वह अत्यन्त रुखाई से बोला

"नहीं शान्त" -- द्युति ने विरोध किया -- "उसने हमें बहुत अच्छी तरह से रखा है और एक बार तो मेरे प्राण भी बचाए हैं. और फिर तुम हत्यारे भी तो नहीं बन सकते, तुम खूब जानते हो".

"अच्छा, इसे कुछ नहीं कहेंगे. जब तक कि वह फिर ऐसा मौका नहीं देगा" -- शान्त ने कहा.

"पर यह तो एक नम्बर का शैतान है" -- कर्ण बोला.

शान्त ने कहा "डॉक्टर केशानी. क्या तुम वचन देते हो कि हमारे साथ काम करोगे ?"

"हां" -- डॉक्टर ने उसी रोष भरी मुद्रा में उत्तर दिया -- "पर इस शर्त पर कि जब चाहूं आपसे अलग हो सकता हूं. तुम्हारे अन्तरिक्ष-यान को मेरे द्वारा कोई हानि नहीं होगी".

"ठीक है, क्यों कर्ण ?"

"इनकी बात सराहनीय है" -- कर्ण ने कहा -- "शब्द तो इनके सार्थक मालूम होते हैं".

डॉक्टर उनके दल में शामिल हो गया.

तीनों हर्षित तन मन से काम में जुट गए. कर्ण ने इंजन

सभाला, डॉक्टर ने वैद्यशाला, शान्त ने बोर्ड पर हवा, ऑक्सीजन टैंक इत्यादि.

शान्त ने मृगनयनी को हेलमेट देकर सीट पर आराम से विठा दिया और स्वयं अपनी प्रेमिका के पास पहुँच गया.

"क्या यह हमारी अन्तिम नमस्ते है ? वह वोली"

"नहीं" -- शान्त ने आश्वासन दिया.

कर्ण ने विस्तर सभाला और डॉक्टर तथा शान्त ने हेलमेट पहनकर दोनों बोर्ड सभाल लिए.

पहला यान वड़े यान से अलग कर दिया गया और वह मृतक प्रकाश द्वारा चलाया जाकर शुष्क ग्रह से टक्कर खाने के लिए वढ़ गया.

अव डॉक्टर केशानी की दशा बोझ के कारण गंभीर हो गई उसे सांस लेना भी दूभर हो गया. शान्त भी यान को वश में किए रखने के लिए कमजोरी महसूस करने लगा. थोड़ी देर में पाचों ही बुरी तरह से पड़ गए.

फिर भी शान्त ने अपना प्रयास जारी रखा और थोड़ी देर के बाद अन्तरिक्ष-यान को खतरे से वाहर निकाल ले गया.

उड़ते-उड़ते वे लोग ग्रह के समीप पहुँच गए और उनका यान ऊपर नीचे डोलते हुए प्रकाश की गति से भी अधिक तेज उड़ता हुआ उस भयानक ग्रह को पार कर गया. एक आफत और टली.

14. अनहोनी घटना

अन्तरिक्ष-यान की असह्य गति के कारण द्युति वेहोश-सी पड़ी थी. शान्त ने उसे वनावटी सास दिया. कर्ण ने मृगनयनी को भी होश में

लाने की कोशिश की. शान्त और द्रुति हवाई जहाज में लटक रहे थे. शान्त ने यान के इंजन में एक छड़ और झोंक दी. परिणाम स्वरूप सभी चीजें अपनी साधारण अवस्था में आने लगीं. द्रुति ने मृगनयनी का उनसे परिचय करवाया.

उन्होंने धरती से अपने अन्तरिक्ष-यान का अंतर आंका. वे अभी वहुत दूर थे. केशानी ने खाने की टेवल लगाई. उन्होंने समय मजे से काटा. तव उन्होंने आँकड़े तैयार करने शुरु किए. कर्ण तथा मृगनयनी सच्चे साथी वन गए.

उनका यान समीपतम ग्रह पर धीरे-धीरे उतरने लगा जहां कि तांवे का सूर्य भी था. वे एक खुले स्थान पर उतरे और ठोस धरती पर कूदे. वहां वड़े लंबे-लवे पेड़ थे. जीव तो वहां थे नहीं. धरती एकदम कठोर तथा शुष्क-सी थी. चट्टानें प्लेटीनम धातु की थीं. वह धरती अरवों वर्षों से अस्तित्व में आई थी. उन्हें प्लेटीनम के कारण काफी वल मिला. वे वहां दौड़ भी सकते थे.

तभी पहाड़ के पीछे से एक विशाल जीव नजर आया-- "अरे, यह दैत्य कहां से आ धमका ?" शान्त ने आश्चर्य व्यक्त किया.

"चिन्ता मत करो" -- डॉक्टर ने आश्वासन दिया -- "इसको भी देखते हैं".

केशानी ने वन्दूक से उस पर निशाना साधा. वह गरजता हुआ वुरी तरह से भागा और थोड़ी दूर जाकर गिर गया और चित्त हो गया.

उसके मरते ही उस निर्जन स्थान पर भयानक जीवों का रेवड़ इकट्ठा हो गया. रेंगने वाले अजगर, चीते, मगरमच्छ इत्यादि. तभी एक भारी पेड़ उन जन्तुओं पर गिर पड़ा और उसने सभी को समाप्त कर दिया. उसके तुरन्त वाद वह पेड़ अपने स्थान पर लौट गया.

दोनों युवतियां इस अनहोने दृश्य को देखकर स्तब्ध रह गई. तब उनका जहाज वहां से उड़ा और दूसरे ग्रह की ओर बढ़ने लगा. वह ग्रह भी वीरान और शुष्क था. उसमें क्लोरीन गैस थी. वहां कोई जीव नहीं रह सकता था. आगे बढ़ने पर एक और ग्रह दिखाई पड़ा.

15. विवाह का प्रस्ताव

वे शीघ्र ही एक बड़े सुन्दर नगर पर उतरने लगे, परन्तु वह नगर उनके देखते ही देखते विलीन हो गया और पहाड़ी टीले के रूप में बदल गया जिसके चारों ओर घाटी थी.

"वाह ! ऐसा मनोरम दृश्य मैंने पहली बार देखा है" -- शान्त ने आश्चर्य व्यक्त किया "आओ हम यहां उतरें, हमें तैरना होगा".

उनका यान चोटी पर धीरे-धीरे उतरा. वे सोच ही रहे थे कि उतरें कि न उतरें वहां जीवन का चिह्न तो था नहीं, परन्तु उन्हें किसी असीम शक्ति का आभास अवश्य हो रहा था.

तभी एक व्यक्ति शान्त के डील-डौल का अजीब पोशाक मे उनके सामने आ धमका.

"हलो सज्जनो ! आपको आश्चर्य होगा कि मै आपकी भाषा जानता हूं".

दूसरे ही क्षण वह शान्त, कर्ण तथा युवतियों की बोली में टिप्पणी करने लगा.

"तुम स्वतन्त्र जाति के हो, परन्तु मूर्ख, बुद्धू तथा शून्य के बराबर हो, तुम्हें अभी और कई युग लगेंगे यह समझने मे कि मृत्यु,

शोक, बुढ़ापे इत्यादि से कैसे ऊपर उठें. मैं थोड़ा समझाने की चेष्टा करूगा".

शान्त सम्मोहन के कारण घबरा गया फिर भी डटा रहा.

"मेरे लिए यह पहला अवसर है" -- वह बोला -- "जबकि बिना मन वाले जीव मेरे सामने डटे रहे हों".

फिर वह व्यक्ति किरण की आकृति में आकर जैसे ही बोलने लगा और उन्हें धमकाने लगा. वैसे ही कर्ण ने अपनी बन्दूक से उस पर गोली दाग दी

वह काल्पनिक व्यक्ति भी विलीन हो गया तथा ग्रह भी गायब हो गया.

"अरे ! यह सच्चाई थी कि हमारे पूर्वजों के भूतप्रेतों का स्वरूप हमारे सामने आ रहा था ?" द्युति ने पूछा.

"इस घटना का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है. इसे स्वप्न या सम्मोहन की अवस्था कहा जा सकता है" -- कर्ण ने कहा.

इस धक्के से अभी वे संभल भी नहीं पाए थे कि कर्ण को एक और ग्रह मडल दिखाई दिया जिसमें से हरा-हरा प्रकाश दिखाई दे रहा था. तावे की धारियां भी वहा नजर आ रही थीं. उनहोंने गौर से ग्रह को ढूँढने की कोशिश की वेधशाला मे से देखने पर वह अभी दूर दिखाई दे रहा था.

तभी कर्ण मृगनयनी के चमकते हुए चेहरे से आकृष्ट होकर उसकी ओर झुका और उसके गले में बाहें डालकर बोला -- "मृगनयनी, तुम्हें पता है मैं तुमसे कितना प्यार करता हूं ?"

"खूब जानती हू" -- प्रिय कर्ण.

वे दोनों इजन वाले कमरे में गए. वे अभी भी अपने रहस्य को छिपाए रखते. पर शान्त ने पूछ ही लिया-- "क्या पाया तुमने, कर्ण ?"

कर्ण सदा की भांति गंभीर बना रहा.

"हां, क्या समझ पाए, कर्ण ?" द्युति ने मुस्कराते हुए पूछा.

"मेरी भावी पत्नी" -- कर्ण ने धीरे से कहा.

दोनों युवतियां परस्पर गले मिलीं. दोनो व्यक्तियों ने हाथ मिलाए यह समझते हुए कि यह कल्पना नहीं बल्कि वास्तविकता थी.

एक ग्रह का पता लगाया गया और अन्तरिक्ष-यान उधर को मोड़ दिया गया, जब वे उसके वातावरण के समीप पहुँचे और यान की गति धीमी की तो सत्रह बड़े सूर्य चारों दिशाओ में बिखरे नजर आए. वहा विषैली गैस का अभाव था. तापमान भी अनुकूल था. परन्तु शान्त ने यान को समुद्र पर उतार कर जब उसका जल चखा तो बोला -- "आमोनिया कॉपर सल्फेट-भागो यहा से" और निकट के द्वीप की ओर ध्यान घुमाया

16. नल से भेंट

यान तट पर पहुँचा तो कुछ आवाजे सुनाई दी -- "यह गोलाबारी कैसे हो रही है ?" शान्त बोला -- "अणु विस्फोट !" -- "अभी देखते हैं" -- कर्ण बोला -- "ऐसे हवाई जहाज तो हमने कभी देखे नही ये तो जानवर हो सकते हैं". उनमें से एक तो नई प्रकार का जीव था जो अकेला ही एक जंगी जहाज को भी संभाल सकता था. उन जीवों की चोंच और डैने बड़े-बड़े थे. वे विचित्र पोशाक पहने हुए तथा अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे. उनके गोलों से आग बरस रही थी.

दोनों ओर से गोलाबारी कुछ क्षणों के लिए हुई. अन्त में

उनका बेड़ा परास्त होकर भाग गया, परन्तु जाने से पूर्व उस विशालकाय जीव (बेड़े) ने इनके अन्तरिक्षयान को काफी क्षति पहुँचाई.

तभी एक अचम्भा इन्हें देखने को मिला. युद्ध के उपरान्त जहां इनका यान उतरा वहा शत्रु का दल खड़ा मिला. उनके साथ उनकी स्त्रिया भी, जो गहनों से लदी थीं. वे सभी हृष्ट-पुष्ट थे. पुरुष लगभग निरस्त्र चमड़ी, नीली आंखें तथा बाल काले

"मैं तो उतरुंगी नही" -- द्युति हैरान होकर बोली -- "कितने भयानक जीव हैं !"

"नीचे उतर कर उनसे परिचय तो प्राप्त कर लो" -- कर्ण ने कहा "वे कितने उतावले हैं !"

दोनों ओर से लोग आगे बढ़े. उन लोगों ने सैनिक ढंग से इन अतिथियों का स्वागत किया. उनके पीछे खड़े दासों ने भी इनको वैसे ही नमस्कार किया. तब उनके नेता नल ने तांबे के ग्रह की ओर सकेत किया.

वे लोग इनके साथ अपने हवाई जहाजों में तावे के ग्रह की ओर उड़े वे एक बड़े नगर में पहुँचे जहां सड़कें भवनों के ऊपर बिछा रखी थीं तथा अलग-अलग वर्गों के लिए अलग-अलग मार्ग थे

उनका मुखिया नल इन्हें एक विशाल भवन में ले गया. वहां सुन्दर पेड़, सुगन्धित पवन, स्त्री तथा धातुओं से बने भवन अनोखी छटा लिए हुए थे.

वहां पहुँचते ही वे सम्राट के अतिथि बने. उनके लिए मेजों पर विविध प्रकार के व्यजन परोसे गए. पुरुषों व स्त्रियों को भोजन के बाद अलग-अलग सुसज्जित कमरों में ठहरा दिया गया जहां हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध थीं.

17. मार्दनल तथा कोड़ल

प्रातः होते ही उनकी शेव दासों द्वारा की गई. उन्होंने साबुन की जगह सुगन्धित पदार्थ लगाए. दुति ने उनकि एक दास दम्पत्ति से वातचीत की तब वे रक्षक इन्हें दरवार में ले गए.

दास कुण्डल जाति के थे तथा स्वामी मार्दनल नस्ल के. दासों के राजकुमार तथा राजकुमारी भी थे. उनके राजकुमारी के पास ऐसे-ऐसे हेलमेट थे जिनको सिर पर रखने से सारी ज्ञान पहनने वाले को प्राप्त हो जाता था.

वे दास कुण्डल के राजकुमार कोड़ल के सम्वन्धी थे. मार्दनल जाति का नल शिकार के लिए गया था तो उन लोगों को वन्दी वना लाया था.

कोड़ल राजकुमार ने इन्हें वताया कि नल इन दासों को तथा उन अतिथियों को मार कर तावा हथियाने की योजना वनाए हुए है क्योंकि उनकी धरती पर तावा होता ही नहीं.

"फिर हम वच कैसे सकते हैं ?" शान्त ने पूछा.

दासों के राजकुमार कोड़ल ने कहा कि वे उन्हें अपनी राजधानी कुदाल में ले जा सकते हैं जहां कि उसके पिता उनका भव्य स्वागत करेंगे तथा वहां तांवा जितना चाहे मिल जाएगा.

दास राजकुमार कोड़ल ने प्रसन्न होकर शान्त को पी. एच. डी. की डिग्री प्रदान की. मार्दनल जाति का नल अपने अंग रक्षकों के साथ वड़े रोव से अपनी धाक जमाने के लिए भवन में दाखिल हुआ. उसके इस अनुचित व्यवहार के कारण शान्त ने सशस्त्र सैनिकों की वुरी नीयत को भांपते हुए उन्हें तो पटख दिया. इसपर नल ने विरोध किया.

ये अतिथि राजकुमार कोड़ल के साथ हो लिए. राजकुमार ने स्वयं कट्रोल सँभाला लिफ्ट द्वारा ये ऊपर गए और राजकुमार ने उन विरोधी सशस्त्र सतरियों को मार दिया

भवन के बाहर खड़े सैनिक दल से भी लड़ाई लड़नी पड़ी. शान्त तथा कर्ण ने गोलियों की बौछार की तथा शत्रु के सैनिक दल को एक क्षण में ही खत्म कर दिया गया. तब वे अपने यान को लेकर उड़ गए

नीचे से गोलियों की बौछार होने लगी, परन्तु वे गोलियों की मार से ऊपर जा चुके थे. उन्होंने राजभवन पर तथा राजधानी पर भी बमबारी की. नीचे सब कुछ धुए में ढक गया था.

वे काफी ऊपर उड रहे थे. शान्त ने यान धीमा कर दिया तथा दूसरों से सलाह लेने लगा.

"अहा ! शीतल पवन का झोंका कितना सुखद है" -- उसने उस ऊचाई तथा पतली पवन में सास लेते हुए कहा तथा यान को समुद्र की ओर मोड़ा तथा कट्रोल केशानी के हाथ में दिया. समुद्र के समीप उड़ते हुए मार्दनल के हवाई जहाजों ने उन्हें घेरने की कोशिश की परन्तु ये लोग यान को उनकी मार से ऊपर ले उड़े.

कुण्डल प्रदेश के राजकुमार कोड़ल ने अपने पिता को सारा वृत्तान्त फोन पर बता दिया. यह महत्वपूर्ण समाचार उनकी विजय तथा सुरक्षित वापसी के सम्बन्ध में था.

शान्त ने कर्ण से पूछा -- "क्या इन लोगों पर भरोसा किया जा सकता है और राजभवन में रुकना ठीक है ?"

"मुझे तो ये लोग उन मार्दनल जाति के लोगों से कहीं अधिक हितैषी मालूम होते है" -- कर्ण ने उत्तर दिया -- "और जहां तक

ठहरने की बात है हम अलग रहेंगे. रहना तो जरूर है यहा तांबा मिलने की आशा भी तो है".

"तुम्हारा कहना शिरोधार्य है" -- शान्त ने संतोष व्यक्त किया.

नीचे नगर से अपने स्वागत के लिए अनेकों तोपों की सलामी की गूँज उन्हें सुनाई दी. चारों और पताकाए, विज्ञापन तथा स्वागत गान देखने तथा सुनने को मिले

उनके स्वागत के लिए उनके नीचे उतरने से पूर्व ही हवाई जहाज ऊपर ही पहुँच गए. सजी हुई वेश-भूषा में जनता की अपार भीड़ थी. भारतवर्ष तथा उस देश के झंडे साथ-साथ लहरा रहे थे तथा दोनों देशों के राष्ट्रगान की धुन बज रही थी उनके मुक्त शाही परिवार का भी भव्य स्वागत हो रहा था.

हवाई अड्डे पर शाही परिवार के लोग भी अत्यन्त सादी वेश-भूषा में थे जिन्हें देखकर शान्त को आश्चर्य हुआ.

"हमारे बन्दी होने के कारण शाही परिवार भी साधारण वस्त्रों में हमारा स्वागत कर रहा है", राजकुमार कोड़ल ने स्पष्ट किया.

राजकुमार कोड़ल जिसे दुणाक व द्रोण भी कहते थे. उसने उतरते ही कहा "मित्रो ! यह मेरे पिता जी हैं कुण्डल सम्राट. पिता जी, इन लोगों ने हमें उन राक्षस शत्रुओं से छुड़वाया है. यह है सरस्वती की मूर्ति श्री शान्त और ज्ञान के भंडार, दूसरे श्री कर्ण साक्षात् कुवेर, कुमारी दुति तथा मृगनयनी और ये हैं डॉक्टर केशानी प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा इनके वन्दी".

"महाराज, राजकुमार द्रोण ने हमारे बारे में बढ़ा-चढ़ा कर कहा है" -- शान्त बोला -- "परन्तु यह नहीं बताया कि हमें बचाने वाले ये लोग ही हैं".

सम्राट ने इनके शब्दों की अपेक्षा करते हुए इनके प्रति बड़ा आभार प्रकट किया, परन्तु आश्चर्य से बोला "धरती के इन अतिथियों के विषय में सुनकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ है. ये देवी सरस्वती व कुबेर की साक्षात् मूर्तियां होते हुए भी दूसरों के दास कैसे बन गए ? इनकी पदवियों की भी हमें समझ नहीं आई".

राजकुमार द्रोण ने बताया -- "पिता जी, हमारी भाषा में इनकी पदवियों के बराबर के शब्द तो हैं नहीं. इनकी सरकार प्रजा द्वारा चुनी हुई प्रजातन्त्र कहलाती है जहां घोड़े, गधे सब बराबर हैं. वहां अपने अधिकार तो सभी मांगते हैं परन्तु कर्त्तव्य को कर्त्तव्य समझकर निभाने वाले विरले हैं. इनका देश ब्रह्माण्ड में प्राचीनतम तथा सभ्यता का स्रोत रहा है. उस देश आयावर्त से ही अन्य देशों में सभ्यता, ज्ञान तथा विज्ञान फैला. फिर युग बदला और सोने की चिड़िया तथा ऋषियों का देश परस्पर फूट के कारण परतन्त्र बन गया. अब इनका महान् देश भारतवर्ष फिर उन्नति के शिखर पर पहुँच रहा है, पर परस्पर ईर्ष्या-द्वेष के कारण ये एक दूसरे की टांग भी खींचने लग जाते हैं".

राजकुमार द्रोण ने शान्त, कर्ण तथा डॉ. केशानी के परस्पर झगड़े की बात भी बताई कि कैसे उन्होंने आपस में मिलकर द्रुनल जाति के राक्षसों से अपनी भी रक्षा की तथा इन्हें भी बचा लाए - "कर्ण तथा शान्त ने अपने शत्रु केशानी को पिस्तौल भी दिया और वह उनका दास भी बना रहा".

"बेटा, जो तुम कह रहे हो ठीक है ? यह अजीब सी मान मर्यादा है".

"जी हां पिता जी, ये लोग हमसे कई बातों में आगे हैं, और ज्ञान, विज्ञान, शौर्य, धैर्य, दया, दानशीलता, एव, प्रभु में आस्था इत्यादि सभी गुण इनमें हैं".

वार्तालाप करते-करते वे लोग ऐसे सुन्दर राज प्रासाद में पहुँचे जो मार्दगलों के राजभवन से भी कहीं अधिक बढ़िया था. वहां हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध थी. तैरने के लिए तालाब भी था.

"खूब" -- शान्त के मुँह से निकला -- "क्या ठड़ा जल भी मिल सकता है ?"

"मशीनों द्वारा जल को ठंडा कर सकते हैं" -- द्रोण ने कहा.

"धन्यवाद" -- शान्त ने कहा "मैं भूल गया था. खाना अपना हम स्वयं बनाएंगे, आपका नहीं" "जैसे आप चाहें".

ये लोग अभी स्नान से निवृत्त हुए थे कि तब तक द्रोण लौट आया, परन्तु अबके पूरी सजधज के साथ. हीरों से जड़ी वेशभूषा थी. बग़ल में चमकती हुई मुट्ठी वाली पिस्तौल. दाएं बाजू पर अमूल्य धातुओं का पट्टा जिसमें हीरे भी मढ़े हुए थे. बाएं बाजू की कलाई पर एक ऐसा यन्त्र था जिसपर कुण्डल जाति के ऐतिहासिक अंक थे. . . .

"स्वागत, धरती के अतिथि गण" -- राजकुमार द्रोण ने हरेक की कलाई पर कीमती नीली धातु के छोटे-छोटे टाइम पीस बाँध दिए -- "अब मेरे साथ भोजन के लिए चलने का कष्ट करेंगे ?'

"सधन्यवाद" -- द्युति ने कहा -- "मुझे तो जोर की भूख लगी है".

भोजन कक्ष की ओर जाते समय द्युति तो द्रोण की चमकती हुई कलाई की ओर ही देखती रही.

"ये हमारी शादी की अंगूठिया हैं" -- द्रोण ने उसकी उत्सुकता को शान्त किया

"हमारी धरती पर भी कुछ लोग विवाह के अवसर पर अगूठियों का आदान-प्रदान करते हैं, भारतीय पद्धति के अनुसार

अग्नि को साक्षी रखकर धार्मिक पुस्तक वेदों के मंत्रों के उच्चारण से विवाह को सम्पन्न किया जाता है".

सम्राट ने स्वय उनका भोजन कक्ष के बाहर स्वागत किया. राजकीय परिवार की स्त्रियों की पोशाक हीरों से जड़ी थीं.

भोजनोपरान्त वे जोड़े अपने-अपने कमरों में चले गए. बाहर संतरी खड़े थे

"अब तो सम्राट ने तुम्हें कुबेर का पद दे दिया है" -- मृग नयनी ने चुटकी ली -- "अब हमारे जैसे साधारण लोगों का क्या मूल्य रह गया है" ?

"मैं तुम्हारे लिए वही हू जो पहले था" -- कर्ण बोला -- "इससे हमारे प्रेम में कमी नहीं आ सकती".

दोनों ने परस्पर आलिंगन किया.

"अब यदि ठडा जल मिल जाता तो हम लोग उसमें मजे से तैरते" -- शान्त ने कहा.

"अब तो मुझे मृगनयनी के साथ शयन-कक्ष में जाना है" -- द्युति ने उसके कन्धों पर हाथ रखा -- "शान्त, मैं तुमसे विवाह के लिए प्रस्ताव रखती हूं".

"मैंने अभी तक ऐसी कल्पना भी नहीं की थी" -- वह बोला -- "खैर, यदि तुम चाहती हो तो मैं भी कैसे इन्कार कर सकता हू ? मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी".

"यहा तो विवाह थोड़े में ही सम्पन्न हो जाएगा" -- द्युति ने प्रस्ताव रखा -- "घर लौटने पर तो पिता जी बहुत आडम्बर रचेंगे. शादी बड़ी खर्चीली हो जाएगी".

"तुम्हारे प्रस्ताव से मैं सर्वथा सहमत हूं" -- शान्त ने सतोष व्यक्त किया -- "मैं प्रातः होते ही राजकुमार से अनुरोध करूंगा कि रस्म को विधिवत किया जाए".

"एक बात और" -- दुति बोली -- "मृगनयनी यद्यपि संकोचशील है, परन्तु ऐसे प्रस्ताव का स्वागत करेगी वह स्वयं ही कर्ण के संग विवाह बंधन में बंधना चाहेगी"

"कितना बढ़िया तथा आह्लादकारी सुझाव है !"

शान्त ने द्वार खोला -- "मृगनयनी को इधर लाओ, कर्ण"

"जरा सावधानी से" --दुति ने कहा-- "कहीं बात बिगड न जाय".

"मैं तो इन बातों में सदैव सतर्क रहता हू" --शान्त का उत्तर था.

वे दोनों भी पहुच गए.

"द्युति इस अवसर का लाभ उठाकर आज ही विवाह बंधन का प्रस्ताव रख रही है" -- शान्त बोला -- "और मेरी उत्कट इच्छा है कि तुम दोनों को आज ही विवाह सूत्र में बांध दिया जाए. यद्यपि आप लोगों को आपत्ति न हो इसलिए सोचने के लिए क्षण देता हूँ. हाँ व न".

मृगनयनी पहले तनिक झिझकी और फिर कर्ण के कंधे के साथ लग गई.

"है तो यह एक उपयुक्त अवसर" -- कर्ण ने स्वीकृति दी -- "वापिस लौटने पर घर वाले भी कोई आपत्ति नहीं करेंगे. आगे जैसे मृगनयनी की इच्छा".

"शुभ काम में देरी कैसी ?" वह बोली -- "यदि आज ही आप लोगों का विचार हो तो मैं सर्वथा सहमत हूँ"

"ठीक है मैं उठते ही यह प्रस्ताव राजकुमार के सामने रख देता हू" -- शान्त ने कहा तथा दोनों जोड़ियां सोने के लिए अलग-अलग कमरो में चली गईं.

"मुझे तो आज बड़ी प्रसन्नता हो रही है"-- दुति ने प्यार से

शान्त का हाथ चूमते हुए कहा -- "आज रात भले ही मुझे नींद
आए".

19. विवाह संस्कार

शान्त गर्मी के कारण परेशान-सा बिस्तर से उठा, परन्तु उसक
हृदय गद्‌गद् हो रहा था उसने खूब अच्छी तरह शरीर क
मल-मल कर स्नान किया तथा प्रभु से आशीर्वाद लेने के लि
दत्तचित्त होकर सन्ध्या की.

"प्रभो, इस शुभ अवसर पर आशीर्वाद देना, आदर्श तथा सुख
विवाहित जीवन के लिए और सामर्थ्य प्रदान करना कि अप
कर्तव्य को निष्ठा से पूरा करूँ"

तभी भीतर से सारंगी की मधुर ध्वनि उसे आनन्द विभो
करने लगी.

"नमस्ते शान्त, आज तो खूब खुश प्रतीत होते हो".

"आप भी तो, क्योंकि जीवन में एक नया अध्याय शुरू होने ज
रहा है"

"मुझे तो अब पता लगा कि आप दोनों युवक गायक हैं" --
मृगनयनी मुस्कराई.

"बाथरूम सिंगर्स" -- शान्त का उत्तर था.

सभी की हँसी छूट गई.

थोड़ी देर में कर्ण ने शान्त से कहा -- "इन लोगों के भी अपने
पुरोहित हैं, क्योंकि मुझे भी इनके धर्म का कुछ ज्ञान है, परन्तु
शान्त तुम तो इनके धर्म के विषय में काफी कुछ जानते हो जरा कुछ
बताओ"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद शान्त बोला -- "इन लोगों की आसमानी भाषा है. ये लोग केवल शक्तिशाली सन्तान ही पैदा करते हैं. दुर्बलों व दुराचारियों का यहा कोई स्थान नही. इनकी सर्वोच्च शक्ति ओमन है जो हमारे ओइम् शब्द से मिलती है. हर जीव में उसी की सत्ता मानते हैं जिसे ये अमन कहते हैं. जिसे हम जीवात्मा की संज्ञा देते हैं."

"इनके यहा झूठ, कपट, छल, बेईमानी इत्यादि का नाम नहीं वे ईमानदार, सत्यवादी, दयालु, परोपकारी, बलशाली तथा विद्वान हैं. ये पाप की परिभाषा तक भी नहीं जानते. नीच प्रकृति वाले व्यक्ति इनमें नहीं मिलेंगे".

"अपने सद्‌गुणों व सदाचार के कारण दूसरी जातियों से अपने को श्रेष्ठ समझते हैं. इनके राजा, सेनापति तथा उच्च पद प्राप्त सभी व्यक्ति नैतिक तथा शारीरिक दृष्टि से सबके आगे होते हैं".

एक सेवक ने सम्राट तथा राजकुमार के आगमन की सूचना दी. विधिवत अभिवादन के बाद वे भोजन कक्ष में गए. उसके बाद शान्त ने विवाह की चर्चा छेड़ी. सम्राट बहुत प्रसन्न हुआ.

सम्राट ने विचार व्यक्त करते हुए कहा -- "महामना शान्त, हमारा परम सौभाग्य है कि धरती के अतिथियों का विवाह हमारे राज्य में होने जा रहा है. यह ऐतिहासिक घटना अविस्मरणीय होगी".

"कृपया एक साधारण सी रस्म" -- शान्त ने अनुनय की.

"मैं पुरोहितों को बुलवाता हूं. बेटा द्रोण, तुम्हें प्रबन्ध सौंपता हूं, क्योंकि तुम्हें इनके रीति-रिवाजों का काफी पता है."

"जो आज्ञा पिता जी" -- राजकुमार ने सिर झुकाया.

तब राजकुमार शान्त की ओर मुड़ा और बोला -- "आप

स्थायी प्रकार की शादी चाहते हैं कि तलाक वाली ?"

"हमारी धरती पर प्रणय सम्बन्ध ईश्वरीय देन समझी जाती है और उसे जन्म जन्मान्तरों तक का पवित्र सम्बन्ध समझा जाता है".

"राजकुमार द्रोण ने बताया -- "इस लोक में विवाह से पूर्व वर-वधू का मानसिक परीक्षण होता है. यदि किसी प्रकार से कोई अनाचार का दोषी पाया जाए तो स्थायी सबन्ध सभव नही".

उन दोनों जोड़ियों के सिरों पर तारों से जुड़े हुए हेलमेट लगा दिए गए. थोड़ी देर में उन्हें उतार दिया गया -- "बड़ी प्रसन्नता है कि आपके जीवन की रेखाएं स्पष्ट तथा पवित्र पाई गई हैं. आपका विवाह सम्बन्ध स्थायी रूप वाला ही होगा".

दोनों का परीक्षण आशाजनक निकला.

"यदि इस परीक्षण में कमी हो और मैं सम्पन्न करवा दूं तो मेरे पिता जी आत्महत्या कर लें".

"कारण ?" शान्त सुनकर हक्का-बक्का रह गया.

"क्योंकि विवाह के परिणाम का उत्तरदायित्व उन पर आ जाता है और वह स्वयं पवित्र तथा शुद्ध हृदय हैं".

"धन्य हो ! ऐसे जीवों को हमारी धरती पर महात्मा, ऋषि मुनि और साधु की संज्ञा दी जाती है. वहां राजा जनक जैसे राजर्षि भी ऐसे ही हो चुके हैं. अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा भी आदि ऋषि थे जिन्हें वेदों का ज्ञान हुआ था".

दोनों युवतियों के चले जाने पर राजकुमार द्रोण ने कहा -- "मार्दनल जाति के लोगों ने गैस तथा सेना सम्बन्धी रहस्य को हम कुण्डलों से चुराया है जिससे वे हमारा नाश कर देने की योजना बनाए हुए हैं"

"इसका भी इलाज है" -- शान्त ने आश्वासन दिया --

"अपने अन्तरिक्ष-यान को जरा ठीक-ठाक करते ही आपके साथ चलकर हम उनके राजप्रसाद को तथा सम्राट को नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे".

राजकुमार द्रोण ने अपने अनुभवी इंजीनियरों को काम पर लगा दिया. उनकी कार्यकुशलता को देखकर शान्त चकित रह गया. इतनी जल्दी और इस प्रकार के यन्त्रों का प्रयोग किया गया जिन्हें कि इन लोगों ने न कभी सुना था न देखा था. यान को एक नया रूप दे दिया गया.

इसके बाद राजकुमार राज भवन में वापिस लौट गया. वे दोनों विवाह संस्कार के लिए वस्त्र बदलने चले गए कुछ देर के उपरान्त वे इकट्ठे हो गए.

"हम कैसे जच रहे हैं ?" उन्होंने राजकुमार से पूछा.

"बांके लग रहे हो" -- तीनों ने हाथ मिलाया.

महारानी तथा राजकुमारी की देख-रेख में दुति तथा मृगनयनी ने भी वधुओं वाली वेश-भूषा पहनी.

"संसार की सर्वोत्तम परियां"-- महारानी ने उन्हें देखकर कहा.

"धन्यवाद" -- वे दोनों खूब हँसी.

"महारानी ने दोनों वधुओं की अलकों के साथ चमकते हुए हीरों की झालरें-सी लटका दीं."

दोनों जोड़ियां विवाह-मण्डप में गईं जहां गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे.

संस्कार शुरू होते ही उन दोनों देशों के (भारतीय व कुण्डल) के उपयुक्त गीतों के रिकार्ड बजने लगे. अग्नि को भी प्रज्वलित किया गया. उसमें ऐसे सुगन्धित पदार्थ डाले गए कि सारा वातावरण महक उठा. दोनों देशों के बैंड बजने लगे. उनके पुरोहितों

ने अपनी भाषा में मन्त्रों का उच्चारण किया. दो विभिन्न सभ्यताओं तथा नक्षत्रों के जीवों का सम्मिलित समारोह था.

अन्त में पुरोहित मधुर शब्दों में बोला.--

"श्रद्धेय महाराज, महारानी तथा उपस्थित सज्जनो ! आज हमें धरती से आए हुए मान्य अतिथियों का इस लोक में प्रथम बार विवाह संस्कार करते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है. हम इनके स्थायी सम्बन्ध तथा सुखी विवाहित जीवन के लिए अपने ओमन से आशीर्वाद लेते हैं. हम इनकी समृद्धि, स्वास्थ्य तथा प्रसन्नता की कामना करते हैं".

थोड़े विराम के बाद वह फिर बोला -- "शान्त, द्युति तथा कर्ण, मृगनयनी -- आप हमारे सामने शपथ ले रहे हैं कि आप सदैव एक- दूसरे के प्रति ईमानदार तथा सच्चे बनकर अपने कर्तव्य को निष्ठा से निभाते रहेंगे कहिए आपको स्वीकार है ?"

"हमें स्वीकार है" -- दोनों जोड़ियों ने हस्तबद्ध स्वीकार किया तथा सिर झुकाए.

"मैं आशीर्वाद देता हूं कि तुम दोनों युग्ल प्रलय तक इस पवित्र बँधन में बँधे रहो तथा खूब फलो-फूलो"

पुरोहित के आगे उन्होंने झुककर चरण स्पर्श किए. उन युग्लों को सुन्दर फ्रेम में मढ़ाकर प्रमाण-पत्र भी दिए गए जिनपर सम्राट, राजकुमार तथा पुरोहित के हस्ताक्षर थे. बाद में उन्हें शाही व्यंजन परोसे गए. और उपस्थित प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा उन्हें शुभकामनाएं दी गईं.

उसके बाद पुरोहित ने फिर कहा -- "मुझे इन विशिष्ट विद्वान अतिथियों का स्वागत करते हुए हर्ष तथा गर्व हो रहा है. कठिन समय में इन्होंने अपने सहयोग द्वारा हमारी नीतियों का समर्थन करके हमारी स्वच्छ शासन प्रणाली की श्रेष्ठता को सिद्ध

कर दिया है. इससे हमारी मित्रता दृढ़ हो गई है उन्होंने हम पर स्वस्थ छाप छोड़ी है".

जनता ने हर्ष ध्वनि की और प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इन्हें विधिवत सलामी दी

द्युति ने अपने कमरे में पहुँच कर कहा -- "शान्त, क्या यह सब कुछ भव्य नहीं था ? हमें तो इसकी कभी कल्पना भी नहीं हो सकती थी. मैं तो जिन्दगी भर इसे नहीं भूलूंगी".

"ठीक कहती हो. ऐसे भव्य समारोह को कौन भूलेगा ? यह हमारा परम सौभाग्य है".

20. कुण्डलों की विजय

"ऐसी अमूल्य वेश-भूषा तथा हीरों से जड़ी अगूठी को देखकर मुझे विस्मय हो रहा है, शान्त" -- कर्ण ने उपहार में मिली अंगूठी वाली उगलियों को दिखाते हुए कहा.

"अरे भाई, ये ऐसी अगूठियां है जो कान्तिहीन नहीं हो सकतीं, न ही ढाली जा सकती हैं".

"तुम्हारी अल्काओं पर लटकाई गई नगों से जड़ी झालरें तुम्हें कैसी लग रहीं है ?" कर्ण ने पूछा.

"इनके क्या कहने ! ये तो अपनी प्रकार की आप ही हैं" - शान्त फूल रहा था -- "पर जब हम चम्बा में अपने घर लौटेंगे तो लोग कहेंगे कि ये बोतल खोलने वाली चाबियां हैं".

दोनों की हँसी छूट गई.

"हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है" कर्ण ने कहा.

"यदि हिमाचल प्रदेश के गाव में हमारी पत्नियां हीरों से

जटित वालियाँ पहनकर वाहर निकली तो हमें धर्म-पत्नियों से भी वंचित होना पड़ेगा" -- शान्त ने मजाक किया.

दोनों ने फिर ठहाका लगया.

मृगनयनी ने प्रश्न किया--"हमारे इन प्रमाण-पत्रों को अपनी धरती पर मान लिया जाएगा ?"

"न मानेंगे तो वहा फिर से अग्नि के चौगिर्द भाँवरे ले लेंगे डवल शादी हो जाएगी"-- कर्ण मुस्कराया.

तव खाने से निपटने के वाद वे अपने अन्तरिक्ष यान को देखने गए. यान पूरी तरह से तैयार खड़ा था पर तावे की अतिरिक्त छड़ों की कमी थी

"तावे की क्या स्थिति है, राजकुमार ?"-- शान्त ने पूछा.

"इसकी खोज का हर सम्भव प्रयत्न किया जा रहा है. मैं स्वय भी जुट रहा हू यदि अवकाश हो तो आप भी साथ जुट जाए".

दोनों ने ही राजकुमार की सहायता करना सहर्ष स्वीकार कर लिया. नई धातु से काम करना कर्ण के लिए सर्वथा नया अनुभव था.

तभी प्रधान कर्मचारी ने सूचना दी -- "तावे की दो छड़ों का प्रवन्ध हो गया है. एक छड़ लगा दी गई है इंजन में तथा दूसरी को वाद के लिए रख दिया गया है".

"शावाश !" राजकुमार द्रोण ने उसे थपकी दी. "मुझे इतनी आशा नहीं थी".

शत्रु मार्दनल का हवाई दल इनकी सीमा पर आक्रमण कर ही रहा था. इन्होंने उनके हवाई जहाजों को वेरोक-टोक आने दिया. तव इन्होंने उनका घेरा डाल लिया, पर वे बड़ी फुर्ती से सभी वचकर निकल गए. इन्होंने उनका पीछा किया तथा उन्हें उनकी

सीमा के पार दूर तक खदेड़ दिया. जब ये वापिस लौटे तो उन्होंने अधिक शक्ति से इन पर चढ़ाई करके बमबारी की.

शान्त, कर्ण तथा डॉ. केशानी ने स्थिति संभाली. शत्रु काफी नुकसान पहुँचा गया था. इन्होंने भी धैर्य नहीं छोड़ा.

ये अपने अजेय अन्तरिक्ष-यान को शत्रु की सीमा के पार ले गए. उनके जहाजों को तो घमासान गोलाबारी से मार-मार कर गिरा दिया. भागते हुओं का पीछा करके उनमें आग लगा दी गई. अब ये वेखटके राजा के भवन पर पहुँच कर तसल्ली से गोले फैंकने लगे. थोड़ी देर में राजप्रासाद जमीन से मिला दिया गया और चारों ओर धुआँ ही धुआँ हो गया. राजधानी के निवासियों में हाहाकार मच गया. शत्रु सेना का शायद ही कोई सैनिक बचा होगा.

विजयी बनकर वापिस लौटने पर इनका भव्य स्वागत किया गया. तब कुण्डल नरेश ने सभा बुलाई और विशेष अतिथियों को मंच पर अपने साथ स्थान दिए.

सम्राट ने अपने स्वागत भाषण में कहा -- "हमारी भाषा में आपके भव्य स्वागत के लिए शब्द नहीं हैं. आपकी सेवाओं के लिए मैं अपनी ओर से, शाही परिवार की ओर से तथा सारे प्रदेश की ओर से आभार प्रकट करता हूँ. धन्य है वह भारत देश जिसके निवासी ऐसे धीर, विद्वान, वैज्ञानिक, भद्र तथा निस्वार्थ सेवी हैं. मुझे ऐसे देश से मित्रता का हाथ बढ़ाते हुए गर्व महसूस हो रहा है. ऐसे महान् तथा उन्नत देश के इस ब्रह्माण्ड में अस्तित्व का हमें अब पता लगा है. हमारा ऐसे देश को शत शत प्रणाम".

तब सम्राट ने शान्त को अपने राज्य के राजाधिराज की पदवी दी, तथा अमूल्य धातु का कंगन दिया. कर्ण को सम्राट ने अपने

राज्य में अपना प्रतिनिधि घोषित किया तथा केशानी को एक बैग भेंट में दिया.

कुण्डल सम्राट के भाषण के उत्तर में शान्त ने कहा -- "सम्राट महोदय ने हमारा तथा हमारे देश का सम्मान करके अपने बड़प्पन और प्रतिष्ठा का प्रमाण दिया है. हमने मानवता के प्रति अपना कर्त्तव्य मात्र निभाया है. मैं उस ओमी से आप के व राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रार्थना करता हू और अपने देश की ओर से दृढ़तर मैत्री का आश्वासन देता हू".

तालियों से मंच गूंज उठा

विशेष अतिथि धरती के लिए उड़ान भरने की तैयारी करने लगे.

सम्राट, महारानी, राजकुमार, दरबारी तथा अन्य आए हुए गण्यमान्य व्यक्ति भी उन्हें भव्य विदाई देने के लिए उपस्थित थे.

सम्राट ने उनके उड़ने से पूर्व फिर अपने सिर पर हाथ रखकर कहा -- "वह सृष्टा ओमी आपके हर प्रयास को सफल करे और आप उसे स्वयं प्राप्त कर लें. हमारी अन्तिम शुभ कामना"

कुण्डल के शाही बेड़े ने तोपों की सलामी दी.

शान्त ने सभी की ओर से हृदयस्पर्शी शब्दों में धन्यवाद दिया और सभी ने नीचे खड़ी भीड़ को झुककर नमस्कार किया और तब अपने अन्तरिक्ष यान में प्रवेश किया.

21. साहसिक यात्रा से वापसी

यान के अन्दर प्रवेश करते ही केशानी ने अपना बैग खोला. उसे हीरों की आश थी पर पाया उसने चालवीय रेडियम.

पहले उसे निराशा हुई परन्तु जब उसने गौर से देखा तो कीमती हीरे तथा जवाहर भी मिले जिनका कि उसे मुँह मांगा मूल्य मिल सकता था.

"अव" -- उसने सोचा -- "मैं अपनी राह नाप सकती हूँ".

अन्तरिक्ष-यान की वापसी कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं थी. वे बारी-बारी यान को उड़ाते हुए उसे बड़े-बड़े सूर्यों के आकर्षण से खींच ले गए. उसमें लगे हुए यन्त्र यान की हर क्षण की गतिविधि को दर्शा रहे थे.

आधे मार्ग में पहुच कर छड़ को उल्टा दिया गया तथा यान लट्टू की तरह घूमा.

कुछ दिनों तक यात्रा करने के बाद शान्त ने एक ऐसा नक्षत्र देखा जिसका मनोरम दृश्य वह देखता ही रह गया.

नीचे की ओर उड़ते समय उन्हें धरती दिखाई पड़ी और बर्फानी ध्रुव प्रदेश भी. नीचे बादल छा रहे थे.

लड़कियां भोजन तैयार करने गईं तो कैशानी शान्त के पास बैठ गया.

"सज्जनो ! तुमने मेरे बारे में क्या फैसला किया है ?" उसने प्रश्न किया.

"तुम्हारी सहायता को देखते हुए तो तुम्हें मुक्त कर देना चाहेंगे, पर साथ ही तुम एक दुश्ट व्यक्ति भी हो. तुम स्वयं ही बताओ कि क्या तुम दया के अधिकारी हो ?"

"मुझे चिन्ता नहीं जो चाहो करो" -- डॉक्टर बोला -- "बचा रहा तो मेरी यह कमाई काफी है".

"तुम हमसे बच कर कहीं भी नहीं जा सकते. एक बात और, यदि तुमने द्युति व मृगनयनी की ओर झाँका तो तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे. समझे ?" -- शान्त ने चेतावनी दी.

"बिल्कुल, अच्छा नमस्ते"

हिमाचल प्रदेश की सीमा में प्रवेश करने से पहले ही डॉक्टर केशानी ने इधर-उधर झांका, धरती वाला सूट पहना और कुण्डल प्रदेश का हवाई छाता लेकर दस हजार फुट की ऊंचाई से कूद पड़ा और हवा में ओझल हो गया।

अन्तरिक्ष-यान जब नीचे आया तो शान्त सहसा चौंक पड़ा.

"अरे ! केशानी की तो खबर लें और उसे ताले में बन्द कर दें. बाद में उसके भाग्य का निर्णय करेंगे".

"मैं अभी देखता हूं" -- कर्ण ने कहा.

पर कर्ण तुरन्त लौट आया. "वह जेबी पैराशूट द्वारा भाग निकला है, पर कम्पास द्वारा हम अभी उसका पता लगा लेते हैं"-- कर्ण बोला.

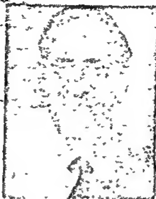
"अच्छा हुआ जान छूटी" -- द्युति ने आराम की सांस ली.

तभी उन्हें चम्बा नगर की हवाई पट्टी की सर्च लाइट (बिजली की तेज रोशनी का लैम्प) नजर आई.

"दो मास गुजर गए" -- कर्ण बोल उठा.

अन्तरिक्ष-यान धीरे से उतरा. वे लोग स्थायी युग्लों के रूप में अपने-अपने निकट सम्बन्धियों तथा प्रशसकों से इस ऐतिहासिक तथा साहसिक यात्रा के बाद बड़े प्रेम से मिले.

* *



श्रीचन्द्र दत
एस.सी.दत

1.2.1924 को वीर मदता, तहसील शकरगढ़, पाकिस्तान में सुप्रतिष्ठित दत्त मोहयाल ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया।

एम. ए. हिन्दी एवं अंग्रेजी, बी. एड साहित्यरत्न

हिमाचल प्रदेश, पंजाब तथा दिल्ली शिक्षा-विभाग में 35 वर्ष पर्यन्त मुख्याध्यापक हाई स्कूल तथा स्नातकोत्तर (अंग्रेजी) के रूप में क्रमश: कार्य करके जनवरी 1984 में सेवा निवृत्त।

अनेक अंग्रेजी व हिन्दी पुस्तकों के लेखक जिनमें निम्नलिखित कतिपय पुस्तकें उल्लेखनीय हैं -

1. हिन्दी - धीर का धैर्य, अपना खून, प्रगतिपथ, बापू की जीवन गाथा, हित साधना, कवितावली इत्यादि।

2. अंग्रेजी - Inspiring Stories, A Book of Conversation Eng Graded Translation Bapus' Forth, Play way Eng Readers Dictionary.

उप सम्पादक बी. प्रिपेयर्ड (मासिक पत्रिका स्काउट्स तथा गाइड्स - दिल्ली)

हिन्दी तथा अंग्रेजी की पत्रिकाओं में लेख, कविताएं तथा कहानियां प्रकाशित होती रहती हैं।